

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



महा-ई दर्पण



राजभाषा हिन्दी की वार्षिक ई-पत्रिका-2021



जनगणना से जनकल्याण



2021

भारत सरकार, गृह मंत्रालय

जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र

एक्सचेंज बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, सर शिवसागर रामगुलाम मार्ग,
बैलार्ड इस्टेट, मुंबई-400001

दूरभाष/फैक्स: 022-22691266 दूरभाष.:022-22615494,

ई-मेल: dco-mah.rgi@censusindia.gov.in

महा-ई दर्पण

राजभाषा की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका-2021

संरक्षक:-

श्रीमती रश्मि सिद्धार्थ झगड़े, निदेशक,
जनगणना कार्य निदेशालय, मुंबई, महाराष्ट्र

विशेष मार्गदर्शक:-

1. श्री वी.ए.अहिरे, संयुक्त निदेशक (आई.टी)
2. श्री वाय.एस.पाटील, संयुक्त निदेशक
3. श्रीमती बी.एच.ठाकरे, उपनिदेशक

संपादक मंडल:-

1. श्री एस.एन.पायस, उपनिदेशक
2. श्री नितेश पराशर, अनुसंधान अधिकारी
3. श्री वीरेंद्र प्रताप, सहायक निदेशक

प्रकाशन समिति:-

1. श्री किशोर लाडू रासम, डी.पी.ए.ग्रेड-ए
2. श्री योगेश खोबरागड़े, वरिष्ठ संकलनकर्ता
3. श्री अमित, एस.आई.ग्रेड-II

आवरण (मुख्य पृष्ठ):-

1. श्री नितेश पराशर, अनुसंधान अधिकारी
2. श्री योगेश खोबरागड़े, वरिष्ठ संकलनकर्ता
3. श्री अमित, एस.आई.ग्रेड-II

टंकण और फोर्मेटिंग:-

1. श्री राकेश बा. पठाड़े, कनिष्ठ परामर्शदाता
2. श्री गणेश का. बरड़े, कनिष्ठ परामर्शदाता
3. श्री विशाल ग. आटोळे, कनिष्ठ परामर्शदाता

छायाचित्र:-

श्री कमलेश पाटणे, डी.पी.ए.ग्रेड-ए

हिंदी ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख लेखक के अपने स्वयं के विचार एवं दृष्टिकोण से संबंधित हैं। सरकार अथवा कार्यालय का उसमें सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्र व्यवहार का पता:-

जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र
एक्स्चेंज बिल्डिंग, दूसरी मंजिल,
सर शिवसागर रामगुलाम मार्ग,
बैलार्ड इस्टेट, मुंबई-400001

ई-मेल:- dco-

mah.rgi@censusindia.gov.in.

दूरभाष/फैक्स:- 022-22615494 / 22691266

अनुक्रमणिका

1. संदेश :- श्री अमित शाह, माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार (i)
2. संदेश :- डॉ. विवेक जोशी, भा. प्र. से., माननीय भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त (ii)
3. संदेश :- संरक्षक की कलम से:- श्रीमती रश्मि सिद्धार्थ झगड़े, भा.प्र.से., निदेशक, जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र, मुंबई (iii)
4. मुख्य संपादक सह राजभाषा अधिकारी की कलम से:- (iv)

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
5	आपके जिले का नाम कैसे पड़ा?	श्री संजीव श्रीकृष्ण गाँवकर	14-18
6	'प्यूरा' योजना: गाँव में शहर का सुख	श्री कमलेश पाटणे	19-21
7	एकता की जागरूकता	श्री पी. एम. वाज	22
8	सराहना की ताल कहीं गिरने न दे	श्री संजीव श्रीकृष्ण गाँवकर	23
9	कोरोना से आखिरी सीख	श्री वीरेन्द्र प्रताप	24-29
10	भारी बस्ता नाज़ुक कंधे- लाचार मासूम	श्री अमित	30-31
11	सही दृष्टिकोन का ध्यान	श्री वीरेन्द्र प्रताप	32-33
12	ई-ऑफिस और फाईल – एक दीर्घ कथा	श्री संतोष एन. पायस	34-38
13	आज की बचत, कल की सुरक्षा	श्री विक्रम लोखंडे	39-40
14	वित्तीय जोखिम से लेकर वित्तीय सुरक्षा तक..!	श्री गणेश के बरडे	41-42

15	बढ़ती महंगाई	श्री विक्रम लोखंडे	43-44
16	भारत में ई-गवर्नेंस	श्री जितेन्द्र कुमार	45-46
17	" मैं समय हूँ!..."	श्री किशोर लाडू रासम	47-50
18	जिंदगी के रंग कई रे	श्रीमती. स्वाती रा. आन्हाड	51-52
19	ए भाय जरा देखके चलो	श्री किशोर लाडू रासम	53-54
20	एक बहुत ही सुंदर कविता	श्रीमती. स्वाती रा. आन्हाड	55
21	स्त्री स्वतंत्रता	श्री संतोष एन. पायस	56
22	" मैं और मेरी कहानी "	श्री किशोर लाडू रासम	57-58
23	कर्म का फल	श्री विक्रम लोखंडे	59
24	हम तुम जैसे बन जायेंगे	श्री अमित	60-61
25	जनगणना एक जोश है, वह हर दस साल में आती है।	श्री राजकिरण अरुण चिंदे	62-63
26	हिन्दी का सम्मान	श्री जितेन्द्र कुमार	64
27	जिंदगी	श्री भास्कर धसाडे	65
28	वक्त	कु. राकेश बा. पठाडे	66
29	अनदेखी	श्री भास्कर धसाडे	67
30	यहाँ-वहाँ सब जगह कुआ है।	श्री संजीव श्रीकृष्ण गाँवकर	68
31	माँ	श्री संजीव श्रीकृष्ण गाँवकर	69-71

32	त्यागी पेड़	श्री जितेन्द्र कुमार	72-73
33	चुटकुले	श्री जितेन्द्र कुमार	74
34	भारत की जनगणना २०२१ स्लोगन्स	श्री किशोर लाडू रासम	75
35	हिंदी पखवाड़ा -2021 के विजेताओं की सूची	-----	76

महा-ई-दर्पण

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।”

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लुवर और सुब्रह्मण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को फलवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप', - *लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021


(अमित शाह)


आज़ादी का
अमृत महोत्सव

विवेक जोशी, भा.प्र.से.

VIVEK JOSHI, IAS

Ph.D (Economics), Geneva

भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त

REGISTRAR GENERAL &

CENSUS COMMISSIONER, INDIA



भारत की जनगणना 2021
Census of India 2021

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Home Affairs
Government of India

एन. डी. सी. सी. बिल्डिंग - II
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001

NDCC Building-II
Jai Singh Road, New Delhi-110 001



संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र की हिंदी ई-पत्रिका के पहले अंक "महा - ई दर्पण" का प्रकाशन कर रहा है।

मुझे अत्यंत खुशी है कि जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और हिंदी लेखन को प्रोत्साहित करने में "महा-ई दर्पण" पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

"महा - ई दर्पण" इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र के सभी अधिकारी और कर्मचारी हिंदी के सतत विकास हेतु अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान कर रहे हैं और कोरोना संक्रमण के इस विकट दौर में भी आपने अपनी सृजनात्मकता को बनाए रखा, उसे कुंठित नहीं होने दिया, यह बेहद सराहनीय है।

मैं "महा - ई दर्पण" के प्रकाशन से संबंधित समस्त स्तंभों को साधुवाद देता हूं एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना देता हूं।

विवेक जोशी
(विवेक जोशी)



रश्मि सिद्धार्थ झगड़े, आई.ए.एस

Rashmi Siddharth Zagade, I.A.S

निदेशक, जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र
Director of Census Operations, Maharashtra

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Home Affairs, Government of India



निदेशक महोदया का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र, मुंबई द्वारा वर्ष 2021 में राजभाषा हिंदी की ई-पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

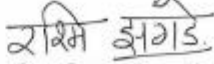
हमारा देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है, प्राचीन काल से ही हिंदी हमारे देश की बोल-चाल की प्रमुख भाषा रही है। स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी ने देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। संविधान सभा ने हिंदी की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान किया एवं भारतीय संविधान में राजभाषा अधिनियम के अंतर्गत समुचित प्रावधान किए गए।

राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन की नीति के अंतर्गत इस निदेशालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है।

बीते दिनों कोविड की महामारी के कारण लगभग सभी क्षेत्रों में चिंता के बादल छाए हुये हैं। किंतु जनगणना निदेशालय, महाराष्ट्र परिवार के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने इस कठिन समय में अपना मनोबल ऊंचा रखा और उन्ही के प्रयासों से यह ई पत्रिका प्रकाशित होने की पहल हो रही है।

इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्राप्त लेखों एवं रचनाओं के लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी से अवगत कराया और पत्रिका की गरिमा बढ़ाई। हिंदी ई-पत्रिका को और अधिक बेहतर बनाने के लिये आपके सुझावों और मनोभावों का सदैव स्वागत है।

मैं भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त डॉ. विवेक जोशी, (भा.प्र.से.) जी का विशेष आभार प्रकट करना चाहती हूँ कि उन्होंने हिंदी ई-पत्रिका के लिए संदेश भेज कर हमारा उत्साहवर्धन किया है। मैं पत्रिका के संपादक एवं इसके प्रकाशन से जुड़े समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई देती हूँ और भावी पाठकगणों को अपनी शुभकामनाएं देते हुये हिंदी ई-पत्रिका की आशातीत सफलता की कामना करती हूँ।


(रश्मि सिद्धार्थ झगड़े)



‘संपादकीय’

श्री संतोष एन. पायस,
उपनिदेशक तथा अध्यक्ष संपादकीय समिति

जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र की हिंदी ई-पत्रिका ‘महा-ई दर्पण’ के अंक-1 को प्रस्तुत किया जा रहा है। पत्रिका की सूची बनाने के लिये जनगणना के अलावा अन्य विषयों पर भी लेख आदि शामिल किये गये हैं।

इस ई-पत्रिका का प्रकाशन मा. निदेशक महोदया इनके प्रोत्साहन के कारण सफल हो रहा है।

इस पत्रिका को बनाने में श्री व्ही.ए.अहिरे, संयुक्त निदेशक (आई.टी.), श्री वाय.एस.पाटील, संयुक्त निदेशक, तथा श्रीमती. बी.एच.ठाकरे, उपनिदेशक इनका विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

ई-पत्रिका में प्राप्त लेख, रचना, इ. का संपादन एवं समीक्षा संपादकीय समिति के सदस्य श्री नितेश पराशर, अनुसंधान अधिकारी – सदस्य, श्री वीरेंद्र प्रताप, सहायक निदेशक (त.) – सदस्य, श्री अमित, सा. अन्वे. ग्रेड - II – सदस्य, श्री के. एल. रासम, डी.पी.ए.ग्रेड-“ए” – (टंकण एवं रूपरेखा), श्री योगेश डी. खोब्रागड़े, वरिष्ठ संकलकर्ता – (टंकण एवं रूपरेखा) इन्होंने पूरी लगन और जिम्मेदारी से करने का प्रयास किया है। किन्तु ई-पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ लेखकों द्वारा संकलित तथा लेखकों के स्वयं के विचार हैं। इसमें कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं। कृपया अपने सुझावों द्वारा संपादकीय समिति को अनुग्रहित करें।

आप सभी पाठकगणों को यदि यह ‘महा-ई दर्पण’ रुचिकर लगे तो अपने सुझावों एवं बहुमूल्य विचारों से संपादकीय समिति को अवगत करायेंगे तो हमें अति प्रसन्नता होगी।

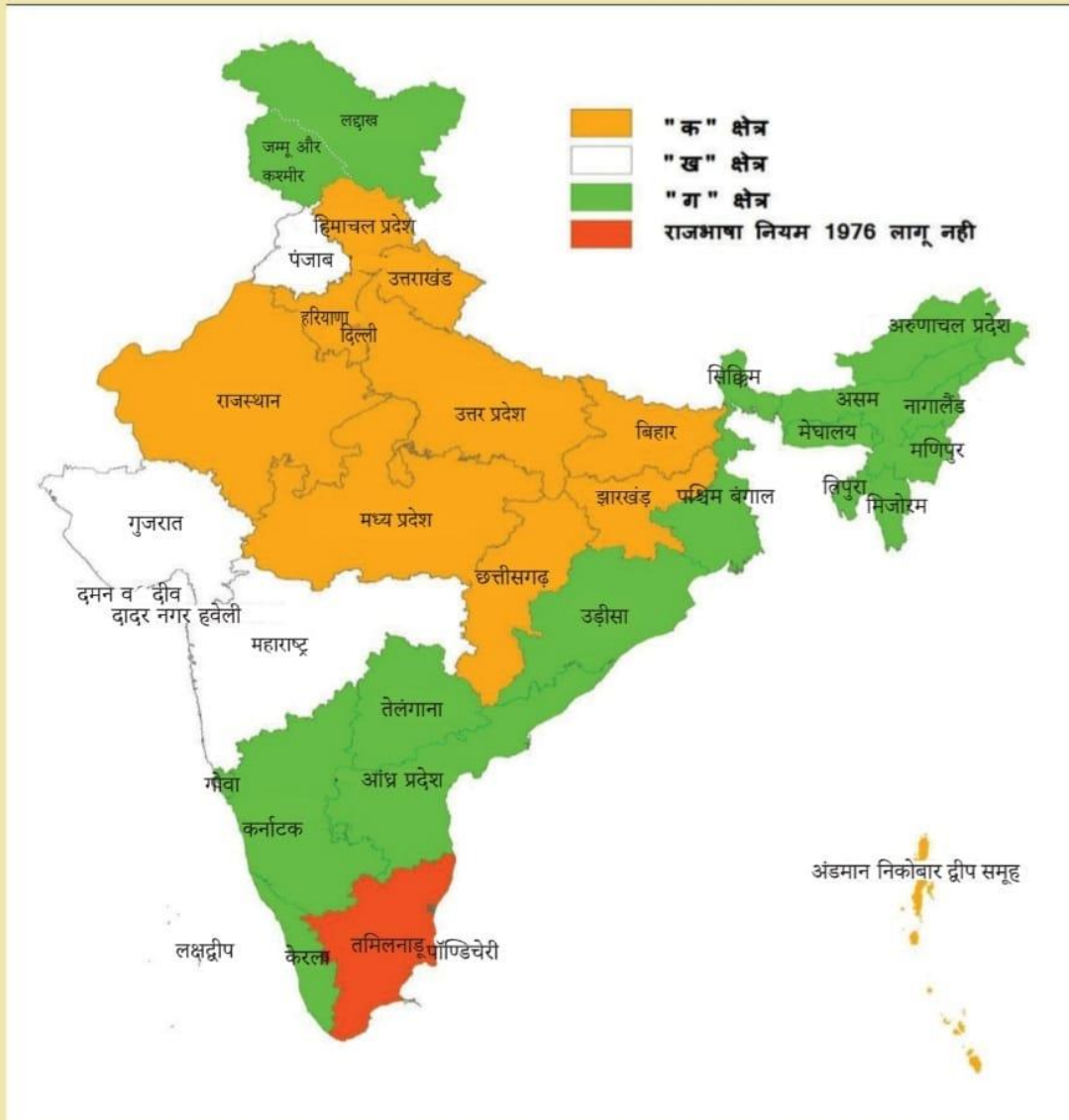
आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन से भविष्य में निदेशालय की वार्षिक पत्रिका अधिक गुणवत्तपूर्वक प्रकाशित करने का हम प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

श्री संतोष एन. पायस
उपनिदेशक तथा अध्यक्ष संपादकीय समिति
जनगणना कार्य निदेशालय,
महाराष्ट्र मुंबई

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों व संघ शासित प्रदेशों को 3 क्षेत्रों यथा क, ख, ग में परिभाषित किया गया है



राजभाषा के प्रयोग की दृष्टि से भारत का क्षेत्रवार वर्गीकरण

क्षेत्र 'क' हिंदी भाषी क्षेत्र : बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र, अंडमान निकोबार द्वीप समूह

क्षेत्र 'ख' : गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र

क्षेत्र 'ग' : क्षेत्र 'क' एवं क्षेत्र 'ख' में उल्लिखित राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को छोड़कर सभी राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र

भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल भाषाएं

भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में भारतीय भाषाओं को मान्यता दी गई है। संविधान के अनुच्छेद 344(1) और 351 के अनुसार अष्टम अनुसूची में प्रारंभ में 15 भाषाओं को शामिल किया गया। विभिन्न संशोधन के अनुसार वर्तमान में 22 भारतीय भाषाएं इस अनुसूची में शामिल हैं जो निम्न प्रकार हैं:-

- | | | |
|-------------|------------|-------------|
| 1. असमिया | 2. उड़िया | 3. उर्दू |
| 4. कन्नड़ | 5. कश्मीरी | 6. गुजराती |
| 7. तमिल | 8. तेलुगु | 9. पंजाबी |
| 10. बांग्ला | 11. मराठी | 12. मलयालम |
| 13. संस्कृत | 14. संथी | 15. हिंदी |
| 16. नेपाली | 17. कोंकणी | 18. मणिपुरी |
| 19. मैथिली | 20. डोगरी | 21. बोडो |
| 22. संथाली | | |



श्री.संजीव गाँवकर,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

आपके जिले का नाम कैसे पड़ा?

महाराष्ट्र के 36 जिलों की अलग-अलग विशेषताएं हैं।

अमरावती

यह जिला एक महत्वपूर्ण, केंद्रीय, औद्योगिक और ऐतिहासिक पर्यटन केंद्र के रूप में जाना जाता है। इसे विदर्भ की सांस्कृतिक राजधानी तथा भगवान इंद्र की राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। मूल नाम उमरावती था। फिर अमरावती में हुआ।

औरंगाबाद

यह जिला खाम नदी के तट पर स्थित है। आज का औरंगाबाद बहुत पहले खड़की के नाम से जाना जाता था। मलिक अंबर ने शहर का नाम फतेहपुर रखा था। बाद में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके नाम पर औरंगाबाद पड़ा।

बीड

जिला बीड बिंदुसार नदी की घाटी में बालाघाट पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। बील जैसे जगह में यह नगर बसा हुआ है। बील का अपभ्रंश होकर बीड नाम प्रचलित हुआ है।

भंडारा

यह जिला पीतल के बर्तनों की नगरी के नाम से जाना जाता था। भंडारा नाम भानारा शब्द से बना है। भान शब्द का प्रयोग पहले बर्तन के अर्थ में किया जाता था। पीतल के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध होने के कारण भान शब्द के बाद भानारा का नाम बदलकर भंडारा कर दिया गया।

बुलडाणा

यह जिला अजंता की पर्वत श्रृंखला में स्थित है। यह शहर प्राचीन काल में भिल्लथाना के नाम से जाना जाता था। भिल्लथाना भिल्लोंका स्थान है। बुलढाणा का नाम उन्हीं के नाम पर पड़ा है।

चंद्रपुर

चंद्रपुर को पहले चांदा के नाम से जाना जाता था। चंद्रपुर जिले को काले सोने की भूमि भी कहा जाता है। जिले में कोयला खदानें और चूना पत्थर की खदानें भी हैं।

धुले

महाराष्ट्र में धुले जिले को पहले पश्चिमी खानदेश जिले के नाम से जाना जाता था। साथ ही, गुजरात के सुल्तान अहमद प्रथम ने फारूकी राजाओं को खान की उपाधि दी और इसलिए इसका नाम साजेशे खानदेश पड़ा। उसके बाद यह जिला धुले के नाम से जाना जाने लगा।

गोंदिया

महाराष्ट्र राज्य के आखिरी छोर पर स्थित गोंदिया की एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत है। गोंड समुदाय यहां का सबसे पुराना निवासी है। उनका व्यवसाय गोंद और लाह लाकर गांव में बेचना था। इसलिए इस जिले का नाम गोंदिया पड़ा। गोंदिया शहर को चावल का शहर भी कहा जाता है।

हिंगोली

महाराष्ट्र में हिंगोली जिले को पहले विंगुली, लिंगोली के नाम से जाना जाता था। उसके बाद जिले को हिंगोली के नाम से जाना जाने लगा।

जलगांव

महाराष्ट्र के जलगांव जिले को पूर्वी खानदेश के नाम से भी जाना जाता है। पूर्वी खानदेश का वर्तमान जिला आज का जलगांव जिला बन गया है।

जालना

महाराष्ट्र में जालना जिला कुंडलिक नदी के तट पर स्थित है। यह मराठवाड़ा का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र है। प्रारंभ में धनी मुसलमान व्यापार करना चाहते थे, जिससे उसे इस स्थान पर बहुत लाभ हुआ। उनका कारोबार बुनाई का था। इसलिए जालना नाम जुला से शुरू हुआ।

कोल्हापुर

कोल्हापुर में महालक्ष्मी मंदिर, महाराष्ट्र के साढ़े-तीन शक्ति पीठों में से एक। महालक्ष्मी के मंदिर की स्थापना से पहले और बाद में कई शताब्दियों तक कोल्हापुर शहर का पुराना और सर्वसम्मत नाम था। ऐसा कहा जाता है कि कोला नाम के एक असुर को महालक्ष्मी ने पहले मारा था और बाद में यह कोल्हापुर के नाम से जाना जाने लगा।

लातूर

महाराष्ट्र के लातूर जिले का पुराना नाम लत्तापुर था। बाद में इसका नाम बदलकर लातूर कर दिया गया।

मुंबई एवं मुंबई उपनगर

हम मुंबई को महाराष्ट्र की राजधानी के रूप में जानते हैं। जिले को सात द्वीपों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। इस शहर को हॉलीवुड ऑफ इंडिया के नाम से भी जाना जाता है। मुंबई के स्थानीय निवासी कोली बांधव की मुंबई माता एक पारिवारिक देवता हैं, इसलिए मुंबई में मुंबई और मां यानी देवी का विलय कर मुंबई का नाम दिया गया है।

नागपुर

नागपुर महाराष्ट्र का एक जिला है, जो कन्हान नदी की एक सहायक नदी है। उसका नाम नागनदी है। इस नदी के बहने का मार्ग नाग जैसे था ! इसी तरह, कई शहरों के नाम के आगे उपसर्ग(पुर) लगाई जाती है। इस तरह 'नाग' नाम के बाद 'पुर' आया और यह 'नागपुर' के नाम से जाना जाने लगा।

नंदुरबार

महाराष्ट्र का नंदुरबार जिला धुले जिले से नवगठित है। नासिक, जलगाँव, धुले और नंदुरबार के उत्तरी महाराष्ट्रीयन क्षेत्रों को खानदेश कहा जाता है।

नासिक

महाराष्ट्र में नासिक जिले को आसपास के क्षेत्र में विभिन्न नामों से जाना जाता है। नासिक का पुराना नाम गुलशनाबाद था, जो फूलों का शहर था। साथ ही प्रारंभिक नाम त्रिकंटक था। साथ ही, चूंकि यह गोदावरी नदी के तट पर नौ पहाड़ियों पर स्थित है, इसलिए इस जिले को नौ चोटियों के शहर नासिक का नाम दिया गया। साथ ही पौराणिक काल में राम लक्ष्मण नासिक के पास के वन में चौदह वर्ष के लिए वनवास में चले गए थे। उस समय लक्ष्मण ने शूर्पणखा नामक राक्षस की नाक काट दी थी। नाक को संस्कृत में नासिक कहा जाता है, इसलिए इसका नाम नासिक पड़ा।

उस्मानाबाद

महाराष्ट्र में उस्मानाबाद जिले की भूमि को श्री राम के वनवास से पवित्र माना जाता है। इस जिले का पूर्व नाम धाराशिव था। बाद में 20वीं सदी की शुरुआत में तत्कालीन निजाम उस्मान अली ने अपने नाम पर उस्मानाबाद शहर का नाम रखा।

परभणी

प्रभावती देवी के प्राचीन मंदिर के नाम पर महाराष्ट्र के परभणी जिले का नाम परभणी रखा गया है।

पुणे

महाराष्ट्र में पुणे जिले को शिक्षा के घर के रूप में जाना जाता है। राष्ट्रकूट राजवंश के दौरान शहर का नाम भी बदल दिया गया था। कहा जाता है कि पुणे शब्द 'पुण्य' शब्द से बना है।

रायगढ़

महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले का मराठों के इतिहास के साथ एक अविभाज्य संबंध है। रायगढ़ जिले को पहले कोलाबा के नाम से जाना जाता था। चूंकि रायगढ़ किला श्री छत्रपति शिवाजी की राजधानी है, इसलिए कोलाबा जिले का नाम बदलकर रायगढ़ कर दिया गया है।

सांगली

महाराष्ट्र के इतिहास में नाटक की शुरुआत सांगली से हुई थी। इसलिए, सांगली को पहले नाट्यपंधारी के नाम से जाना जाता था। सांगली का हल्दी बाजार एशिया का सबसे बड़ा हल्दी बाजार माना जाता है। यहाँ उच्च (चांगली) हल्दी पायी जाती थी। इसलिए सांगली को हल्दी के बड़े बाजार के रूप में भी जाना जाता है।

सातारा

सत्रह गढ़ों की उपस्थिति के कारण महाराष्ट्र के सातारा जिले में सातारा नाम आम हो गया है। किले का मूल नाम सप्तर्षि या सातदारे था। तभी से इसे सातारा के नाम से जाना जाने लगा।

सिंधुदुर्ग

महाराष्ट्र में सिंधुदुर्ग जिला कोंकण का दक्षिणी भाग है। सिंधुदुर्ग जिले का पूर्व नाम दक्षिण रत्नागिरी था। मालवण तट के निकट एक द्वीप पर सिंधुदुर्ग किले के नाम पर जिले का नाम सिंधुदुर्ग रखा गया है।

सोलापुर

महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में शिवयोगी श्री सिद्धेश्वर पर लिखे एक शिलालेख के अनुसार सोनलगी नाम पहले सोलापुर शहर था। उसके बाद सोलापुर जिले का नाम बदलकर सोला और पूर कर दिया गया है। सोलापुर शहर का नाम अहमदपुर, चपलदेव, फतेहपुर, जामदारवाड़ी, कलजापुर, चादरपुर, खांडेकरवाड़ी, महमदपुर, राणापुर, संदलपुर, शेखपुर, सोलापुर, सोनालगी, सोनपुर और वैदकवाड़ी नामक 16 गांवों के संयोजन के नाम पर रखा गया है।

ठाणे

महाराष्ट्र के ठाणे जिले का पुराना नाम श्रीस्थानक था। ठाणे जिले को समुद्री, पहाड़ी और शहरी संरचना की विशेषता मिली है। ठाणे जिले को सबसे अधिक राजस्व अर्जित करने वाले जिले के रूप में जाना जाता है। ठाणे जिले को जल उत्पादक जिले के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इसमें सबसे अधिक बांध हैं।

वर्धा

महाराष्ट्र में वर्धा जिले का नाम पास की वर्धा नदी के नाम पर रखा गया है। इससे वर्धा शहर की पहचान बनी है।

वाशिम

महाराष्ट्र के वाशिम जिले का एक प्राचीन इतिहास है। वाशिम शहर का प्राचीन नाम वत्सुगम था। ऐसा कहा जाता है कि इसका नाम प्राचीन वत्स ऋषि से मिला है।

यवतमाल

महाराष्ट्र में यवतमाल जिले को पहले वनी या उन के नाम से जाना जाता था। उसके बाद जिले का नाम यवत पड़ा, जिसका अर्थ है पहाड़ी पर सतह क्षेत्र।

अकोला

महाराष्ट्र के अकोला शहर में, अकोलसिंह नाम का एक राजपुर प्रमुख शहर के संपर्क में आया। अकोला का नाम उनके नाम पर रखा गया था, क्योंकि उन्होंने गांव की स्थापना की थी।

श्री संजीव श्रीकृष्ण गांवकर,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

‘प्यूरा’ योजना: गांव में शहर का सुख



श्री.कमलेश पाटणे
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

(Providing Urban Amenities in Rural Area ----P U A R A)

प्रोवाइडिंग अर्बन एमेनिटिज इन रूरल एरिया का संक्षिप्त रूप है ---प्यूरा।

इसे हिंदी में ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएँ उपलब्ध कराना कहा जा सकता है।

इस योजना का उद्देश्य पहचाने गए ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं के सृजन और आधुनिक किफायती संपर्क के माध्यम से ग्रामीण-शहरी अंतर को दूर करना है।

‘प्यूरा’ का मूल तथ्य है कि एक शहर के आस-पास के गांवों में विकास की अंतर्निहित क्षमता है और यदि इन गांवों को आवश्यक आधारभूत सुविधाएं प्रदान की जाएं, तो वे आसपास के क्षेत्रों के लिए विकास केन्द्रों के रूप में उभर सकते हैं।

इस योजना का उद्देश्य है ---विकास की क्षमता रखने वाले चयनित नगरों के आस-पास ग्रामीण समूहों को पहचानना और उन समूहों में निम्नलिखित चार प्रकार की सुविधा प्रदान करना है----

- 1: सड़क, परिवहन और बिजली की उपलब्धता।
- 2: बाजारों का संपर्क जिससे किसान एवं अन्य ग्रामीण उत्पादक अपने उत्पादों के लिए अधिकतम मूल्य प्राप्त कर सकें।
- 3: विश्वसनीय टेलिकॉम, इंटरनेट एवं सूचना प्रौद्योगिकी की सुविधाओं के साथ इलेक्ट्रॉनिक संपर्क।
- 4: अच्छी शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण संस्थाओं के रूप में ज्ञान उपलब्ध कराना।

शहरों के आस-पास जिन ग्रामीण समूहों का चयन किया जायेगा उनके लिए अलग-अलग विस्तृत परियोजनाओं की रिपोर्ट तैयार की जायेगी, जिससे वहाँ सृजित की जानेवाली विशिष्ट आधारभूत सुविधाओं की पहचान की जा सके। वैसे सामान्य तौर पर प्रत्येक ग्रामीण समूह को निम्नलिखित सुविधाएं अवश्य उपलब्ध कराई जाएंगी।

➤ सड़क एवं यातायात सुविधाओं का प्रावधान।

- पर्याप्त बिजली आपूर्ति का प्रावधान।
- जल आपूर्ति का प्रावधान।
- कृषि उत्पादों के लिए विपणन सुविधाएं।
- पर्याप्त दूरसंचार, इंटरनेट एवं आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं का प्रावधान।
- मौजूदा विद्यालयों को अगले उच्च स्तरीय विद्यालयों में परिवर्तित करना।
- बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं को उपलब्ध कराना।

'प्यूरा' के लिए जो नीति अपनाई गई हैं उसके अंतर्गत "प्यूरा" समूह में सृजित की जाने वाली आधारभूत सुविधाएं, योजना के पहले चरण में, भारत सरकार एवं राज्य सरकारों की मौजूदा योजनाओं के माध्यम से सृजित की जायेगी।

ऐसी अनेक योजनायें हैं जिनका उपयोग चुने हुए समूहों के विकास के लिए किया जा सकता है। आधारभूत सुविधाएं सृजित करने के अलावा स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना जैसी योजनाओं का उपयोग इन समूहों के गरीबों को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए नए तरीके से किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ --- लोगों को टैक्सी सर्विस, कृषि सेवा केंद्र, विपणन सुविधाएं आदि शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता दी जा सकती है। इस तरह की दी गई सुविधाओं के अलावा समूह के विकास के लिए अन्य मंत्रालयों की योजनाओं का भी उपयोग किया जा सकता है। लेकिन आधारभूत सुविधा सम्बन्धी कमी को पूरा करने के लिए "प्यूरा" के अंतर्गत सिर्फ अनुपूरक सहायता दी जायेगी।

" प्यूरा " जैसी परियोजना देश में पहली बार शुरू की जा रही है, इसीलिए यह जरूरी है कि इसे देश भर में लागू करने से पहले कुछ प्रायोगिक परियोजनाओं के माध्यम से इसकी सफलता की जांच की जाए। इसी उद्देश्य से 2004-05 के दौरान इस तरह की केवल सात प्रायोगिक परियोजनाएं सात राज्यों में शुरू की जाएंगी। वे सात राज्य हैं --- उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र, असम और आंध्र प्रदेश। प्रायोगिक परियोजनाओं को 10-15 गावों के एक समूह से शुरू किया जाएगा।

प्यूरा के अंतर्गत परियोजनाओं की जांच एवं उनकी स्वीकृति और कार्यन्वयन की निगरानी के लिए एक संचालन समिती गठित की गई। भारत सरकार के सचिव को इस समिति का अध्यक्ष बनाया गया। समिति की पहली बैठक 11 जनवरी, 2005 को बुलाई गई जिसमें निर्णय लिया गया कि प्रत्येक चयनित समूह को 4 से 5 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता उपलब्ध करायी जायेगी। प्रारम्भिक चरण में इन परियोजनाओं की कार्य अवधि 3 वर्षों की होगी।

श्री कमलेश मा. पाटणे
डी.पी.ए. श्रेणी “ ए “

जानकारी स्रोत:-
ग्राम विकास परियोजना कार्यक्रम,
भारत सरकार.

महा-ई-दर्पण

एकता की जागरूकता



श्री.पी.एम.वाज़,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

भारतीय इतिहास में जनगणना का एक अनूठा महत्व है जिस प्रकार विभिन्न राज्यों में जनगणना निदेशालय एवं उनके विभाग हैं। उसी प्रकार महाराष्ट्र में भी जनगणना निदेशालय के विभिन्न विभाग हैं।

भले ही जनगणना निदेशालय, महाराष्ट्र का अपना जनगणना भवन न हो लेकिन निदेशालय के अलग-अलग जगहों पर हर कर्मचारी विश्वास, मित्रता और सम्मान के साथ एक-दूसरे का सहयोग कर रहा है। इसीलिए यहां के अधिकारी एवं कर्मचारियों एक अलग तरह की केमिस्ट्री बन गई है। इस निदेशालय में एमटीएस से लेकर सभी वरिष्ठ अधिकारियों तक सभी को समान सम्मान मिलता है। यहां सभी वरिष्ठ अधिकारियों सबसे मित्रता और सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखते हैं, इसलिए ऑफिस में एक अलग ही अंतरंगता है। कार्यालय के विदाई समारोह में प्राप्त विदाई संदेश इस कार्यालय में एक दूसरे के प्रति प्रेम और स्नेह को प्रदर्शित करते हैं।

दीवाली की पूजा हो, रंगोली हो, ईद-मिलन हो, क्रिसमस हो या छोटी या बड़ी पार्टी, सभी धर्मों में एकता का भाव प्रतीत होता है। कार्यालय के किसी भी प्रदाधिकारी के दुख की घड़ी में सभी एक-दूसरे का सहयोग करते हैं, इसलिए जनगणना, महाराष्ट्र परिवार के कर्मचारी एक-दूसरे के प्रति स्नेह के साथ रहते हैं। परिवार के सेवानिवृत्त अधिकारी /कर्मचारी अपने मार्गदर्शन की भूमिका में हैं। जैसे-जैसे हम वरिष्ठ अनुभवी अधिकारी एवं कर्मचारियों के सानिध्य में पले-बढ़े, हम अनजाने में अच्छे कार्य संस्कारों के साथ संवृद्ध हुए।

हाल ही में कोविड महामारी के कठिन समय में ही इस निदेशालय के कुछ अधिकारी और कर्मचारी और इनके परिजनों पर कुछ वैद्यकीय कठिनाईया पहाड़ की तरह गिरी। इस कठिन समय में निदेशिका महोदया के मार्गदर्शन में सभी अधिकारी / कर्मचारी एक दूसरे की सहायता करते और मनोबल बढ़ाते थे। इस मनोबल के कारण एक एम टी एस की नन्ही बेटी की हृदय शल्य चिकित्सा सफल पूर्वक संपूर्ण हुई।

जनगणना निदेशालय महाराष्ट्र परिवार के सभी सदस्यों की शुभकामना इस नन्ही सी बेटी को स्वस्थ जीवन प्रदान करने के लिए हमेशा प्रार्थना करेंगे। इसी विश्वास के साथ ।



श्री.संजीव गाँवकर,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

सराहना की ताल कभी गिरने न दे ।

इस साल 10 वीं कक्षा का वार्षिक परिणाम आ गया है और पहली बार कोरोना की वजह से छात्रों एवं अभिभावकों को अनोखा परिणाम देखने को मिला है। इस परिणाम ने ऐतिहासिक महत्व प्राप्त किया है क्योंकि इसे बिना परीक्षा दिए केवल आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर तैयार किया गया है।

बिना परीक्षा दिए परिणाम घोषित होने से यह परिणाम कुछ हास्यास्पद सा नजर आ रहा है। इस बार पास हुए बच्चों को कोविड बैच, लॉटरी परिणाम, अंकों की जमानत, निर्विरोध पास इत्यादि व्यवसायात्मक नामों से पुकारा जा रहा है। इस दौड़ में लंगड़े घोड़ों की भी जीत हुई है, तो कुछ बड़े-बड़े घोड़े ऐसे भी हैं, जिनकी तारीफ करने के लिए कुछ खास नहीं हैं। ऐसे समय में सभी को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि जो लोग कोरोना की महामारी के संकट का अध्ययन कर रहे हैं, उनका अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में, भ्रमित मन से कायरतापूर्ण मजाक उड़ाना और उन पर हमला करना उचित नहीं है।

यह पहली बार है, जब हमारा देश और पूरी दुनिया कोरोना के इस भयानक संकट का सामना कर रही है। प्रयोग और परीक्षण के आधार पर बहुत कुछ किया जा रहा है, क्योंकि किसी को भी पता नहीं था कि ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में क्या योजना बनाई जाए। इसलिए सरकार ने स्कूली परीक्षाओं के मामले में जो भी निर्णय लिया है, वह उचित ही है इसके अलावा कोई और उपाय भी तो नहीं था। ऐसे समय में बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता देना ही समुचित है।

कोरोना से आखिरी सीख



श्री.वीरेंद्र प्रताप,
सहायक निदेशक

सभी को देख लिया,
सालों साल सुबह नियम से गार्डन जाने वालों को भी,
खेलकूद खेलने वालों को भी,
जिम जाने वालों को भी,
रोजाना योग करने वालों को भी,
'अर्ली टू बेड अर्ली टू राइज' रूटीन वाले अनुशासितों को भी,
.. कोरोना ने किसी को भी नहीं छोड़ा।

उन स्वास्थ्य सजग व्यवहारिकों को भी नहीं, जिन्होंने फटाफट दोनों वैक्सीन लगवा ली थीं।
बचा वही है, जिसका एक्स्पोजर नहीं हुआ या कहिए कि किसी कारणवश वायरस से सामना नहीं हुआ।
हालांकि उनका खतरा अभी भी बरकरार है।

दूसरी बात,
ऐसे बहुत लोग मृत्यु को प्राप्त हुए जिन्हें कोई को-मॉरबिडिटीज (अतिरिक्त बीमारियां) नहीं थीं!
वहीं, ऐसे अनेक लोग बहुत बिमारी के बावजूद बच गए जिनका स्वास्थ्य कमजोर माना जाता था.. और जिन्हें
अनेक बीमारियां भी थीं।

कारण क्या है??

मेरी राय में,

हेल्थ, सिर्फ शरीर का मामला नहीं है!!

आप चाहें, तो खूब प्रोटीन और विटामिन से शरीर भर लें,

खूब व्यायाम कर लें और फेफड़ों में ऑक्सीजन भर लें,
योगासन करें और शरीर को आड़ा तिरछा मनचाहा मोड़ लें,
मगर, संपूर्ण स्वास्थ्य सिर्फ डाइट, एक्सरसाइज और ऑक्सीजन मात्र से संबंधित नहीं है..
चित्त, बुद्धि और भावना का क्या करोगे?
उपनिषदों ने बहुत पहले ही कह दिया था कि हमारे पांच शरीर होते हैं!
अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान मय और आनंदमय शरीर।
इसे ऐसे समझिए,
कि जैसे किसी प्रश्न पत्र में 20-20 नंबर के पांच प्रश्न हैं और कुल अंक 100 हैं।
सिर्फ बाहरी शरीर(अन्नमय) पर ध्यान देना ऐसा ही है, कि आपने 20 अंक का एक ही प्रश्न एटेम्प्ट किया है!
जबकि,
प्राण-शरीर का प्रश्न भी 20 अंक का है,
भव-शरीर का प्रश्न भी 20 अंक का है,
बुद्धि और दृष्टि भी उतने ही अंक के प्रश्न हैं।
जिन्हें हम कभी अटेम्प्ट ही नहीं करते, लिहाजा स्वास्थ्य के इम्तेहान में फेल हो जाना स्वाभाविक है।
वास्तविक स्वास्थ्य पांचों शरीरों का योग है।
पांचों प्रश्न अटेम्प्ट करना ज़रूरी है।
हमारे शरीर में रोग दो तरह से होता है:
कभी शरीर में होता है और चित्त तक जाता है

और कभी चित्त में होता है तथा शरीर में परिलक्षित होता है.

दोनों स्थितियों में चित्तदशा ही अंतिम निर्धारक है.

कोरोना में वे सभी विजेता सिद्ध हुए, जिनका शरीर चाहे कितना भी कमजोर क्यों न रहा हो, मगर चित्त मजबूत था ,

वहीं वे सभी परेशान रहे, जिन का चित्त कमजोर पड़ गया.

अस्पतालों में अधिक मृत्यु होने के पीछे भी यही बुनियादी कारण है.

अपनों के बीच होने से चित्त को मजबूती मिलती है, जो स्वास्थ्य का मुख्य आधार है.

जिस तरह, गलत खानपान से शरीर में टॉक्सिंस रिलीज होते हैं

उसी तरह, कमजोर भावनाओं और गलत विचारों से चित्त में भी टॉक्सिंस रिलीज होते हैं.

कोशिका हमारे शरीर की सबसे छोटी इकाई है.. और एक कोशिका (cell) को सिर्फ न्यूट्रिएंट्स और ऑक्सीजन ही नहीं चाहिए, बल्कि अच्छे विचारों का प्रवाह भी होना चाहिए।

कोशिका की अपनी एक क्वांटम एनर्जी फील्ड होती है जो आपकी भावना और विचार से प्रभावित होती है.

आपके भीतर उठा प्रत्येक भाव और विचार, कोशिका में रजिस्टर हो जाता है.. फिर यह मेमोरी, एक सेल से दूसरी सेल में ट्रांसफर होती जाती है,

यह क्वांटम फील्ड ही हमारे स्वास्थ्य की अंतिम निर्धारक है.

जीवन मृत्यु का अंतिम फैसला भी कोशिका की इसी बुद्धिमत्ता से तय होता है.

इसीलिए,

बाहरी शरीर का रख-रखाव एकमात्र उपाय है.

भावना और विचार का स्वस्थ होना, स्थूल शरीर (gross body) के स्वास्थ्य से कहीं अधिक अहमियत रखता है !

हमारे बहुत से स्वास्थ्य सजग मित्र, खूब कसरत के बावजूद भी मोटे और बीमार हैं.

अनुवांशिकी के अलावा इस मोटापे का एक बड़ा कारण भय, असुरक्षा, अति महत्वाकांक्षा, संग्रहण आदि मनोवृत्तियां भी हैं.

नब्बे फीसदी बीमारियां मनोदेहिक (psychosomatic) होती हैं!

अगर चित्त में भय है, असुरक्षा है, भागम-भाग है.. तो रनिंग और जिमिंग जैसे उपाय अधिक काम नहीं आने वाले, क्योंकि वास्तविक इम्युनिटी, पांचों शरीरों से मिलकर विकसित होती है.

यह हमारी चेतना के पांचों कोषों का सुव्यवस्थित तालमेल है.

और यह इम्युनिटी रातों-रात नहीं आती, यह सालों-साल के हमारे जीवन दर्शन से विकसित होती है.

असुरक्षा, भय, अहंकार और महत्वाकांक्षा का ताना-बाना हमारे अवचेतन मन में बहुत जटिलता से गुंथा होता है!

अनुवांशिकी, बचपन का अनुभव, परिवेश, सामाजिक प्रभाव आदि से मिलकर अवचेतन मन का यह महाजाल निर्मित होता है.

इसमें परिवर्तन आसान बात नहीं है.

इसे बदलने में छोटे-मोटे उपाय मसलन.. योगा, ध्यान, तनाव प्रबंधन आदि ना-काफी हैं.

मानसिकता में परिवर्तन के लिए, हमारे जीवन-दर्शन (philosophy of life) में आमूलचूर परिवर्तन ज़रूरी है. मगर यह परिवर्तन विरले ही कर पाते हैं.

मैंने अपने अनुभव में अनेक ऐसे लोग देखे हैं जो टर्मिनल डिजीज से पीड़ित थे, मृत्यु सर पर खड़ी थी किंतु किसी तरह बचकर लौट आए.

जब वे लौटे तो कहने लगे कि

"हमने मृत्यु को करीब से देख लिया, जीवन का कुछ भरोसा नहीं है, अब हम एकदम ही अलग तरह से जियेंगे."

किंतु बाद में पाया कि साल भर में ही वे अपने वापस पुराने ढर्रे पर जीने लग गए हैं.

वही ईर्ष्या, वही राग द्वेष, वही जीवन-शैली फिर से लौट आयी.

आमूल परिवर्तन कम ही लोग कर पाते हैं

हमारे एक मित्र थे जो खूब जिम जाते थे. एक बार उन्हें पीलिया हुआ और उनका स्वास्थ्य खराब हो गया.

एक महीने में उनका शरीर सिकुड़ गया, और वह गहरे अवसाद में चले गए.

दस साल जिस शरीर को दिए थे, वह एक महीने में ही ढह गया.

अंततः इसी अवसाद से उनकी मृत्यु भी हो गई.

अंतिम वक्त में उन्हें अवसाद इस बात का अधिक था कि अति-अनुशासन के चलते वे जीवन के मजे नहीं कर पाए,

सुस्वाद व्यंजन नहीं चखे,

मित्रों के साथ नाचे गाए नहीं, लंगोट भी पक्की रखे. मगर इतनी कड़ी तपस्या से बनाया शरीर भी एक महीने में ही ढह गया.

जब वे स्वस्थ थे तो मैं अक्सर उनसे मजाक में कहा करता था,

"शरीर में ऑक्सीजन तो डाल दिए हो, चेतना में प्रेम डाले कि नहीं??"

"शरीर में प्रोटीन तो भर लिए हो, चित्त में आनंद भरे कि नहीं? "

छाती तो छप्पन की कर लिए हो, हृदय को विशाल किये कि नहीं? "

क्योंकि अंत में यही बातें काम आती हैं... जीवन को उसकी संपूर्णता में जी लेने में भी, परस्पर संबंधों में भी, और स्वास्थ्य की आखिरी जंग में भी जीवन-दर्शन ही निर्णायक सिद्ध होता है, जीवन चर्या नहीं !!

कोरोना काल से हम यह सबक सीख लें तो अभी देर नहीं हुई है

बाहरी शरीर के भीतर पर्याप्त चेतना का महा-आकाश अब भी हमारी उड़ान के लिए प्रतीक्षारत है.

आइए अपने को सम्पूर्ण स्वस्थ बनाने के लिए उचित भोजन व व्यायाम के साथ सत्यता पूर्ण जीवन, चैतन्य से भरा प्रफुल्लित मन और चित्त में आनन्द भर दे ऐसा जीवन जियें, ध्यान (मेडिटेशन) करें और सदा स्वस्थ व मस्त रहें।

भवतु सब मंगलम्

श्री वीरेंद्र प्रताप
सहायक निदेशक,
जनगणना कार्य निदेशालय,
महाराष्ट्र, मुंबई

महा-ई-दर्पण

भारी बस्ता नाज़ुक कंधे- लाचार मासूम



श्री.अमित,
एस.आई.ग्रेड-॥



स्कूली छात्र अपनी प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के दौरान स्कूल में रोजमर्रा का सामान अपने बैग में लेकर जाते हैं। विडंबना यह है कि घर और स्कूल के बीच यही स्कूली बैग अपने वजन के कारण बच्चों और किशोरों की सेहत के लिए मुसीबत बन गया है। रोजाना बैग को अपनी पीठ पर टांगने के कारण बच्चों की शारीरिक मुद्रा बिगड़ रही है। यह समस्या आज जाने-अनजाने में गंभीर रूप ले चुकी है। इससे अस्थायी से स्थायी अपंगता तक हो सकती है।

हाल ही में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि स्कूली बैग में रखा जाने वाला सामान बच्चों और किशोरों में पीठ दर्द का कारण बन रहा है। यह लक्षण उनके वयस्क होने तक जारी रहते हैं। यह दुनिया भर में चिंता का विषय बन चुका है और शोधकर्ता इस बात पर अध्ययन कर रहे हैं कि बच्चों किशोरों के लिए बैग के वजन की सीमा क्या होनी चाहिए ताकि उन्हें किसी तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्या ना हो। अगर बैगपैक का वजन मांसपेशियों की क्षमता से अधिक हो, तो यह मांसपेशियों में दर्द संरचनात्मक बदलाव और अन्य विकारों का कारण बन सकता है। इन्हें मस्क्यूलोस्केलेटल समस्या कहा जाता है। अगर बैग का वजन शरीर के वजन से 15% से अधिक हो, तो इस बात पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इटालियन बैकपैक स्टडी के अनुसार इटली के छात्र अपने शरीर के वजन का 22 फ्रीसदी वजन बैग में ले जाते हैं। इसमें से 34.8% बच्चों की स्कूली बैग का वजन शरीर के वजन का 30% होता है, जो वयस्कों के लिए स्वीकृत सीमा से अधिक है।

रामप्रसाद ए.एल. द्वारा भारत में 12 से 13 साल के बच्चों पर अध्ययन किया गया , जो अपने शरीर के वजन का 5 ,10 ,15, 20 और 25 प्रतिशत वजन स्कूली बैग में लेकर जाते हैं। अध्ययन में पाया गया कि 15% से अधिक वजन के बैग का बुरा असर शरीर की मुद्रा ,उनके सिर ,गर्दन पीठ और टांगों की पेशियों पर पड़ता है। कई अनुसंधानों के अनुसार बच्चों की स्कूली बैग का वजन उनके शरीर के वजन का 10% होना चाहिए क्योंकि

बच्चे इसे लंबे समय तक अपनी पीठ पर टांग कर रखते हैं जिससे पीठ में दर्द और पोस्चर में नकारात्मक रूप में बदलाव आ सकता है

एक और अध्ययन के मुताबिक राज्य और शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ने वाले 59.06% से अधिक बच्चों के स्कूली बैग का वजन उनके शरीर के वजन से 10 फ्रीसदी अधिक होता है। बैग में रखा गया जरूरत से ज्यादा सामान 24.45 फ्रीसदी बच्चों में पीठ व कंधे के दर्द का कारण बन रहा है। बायोमैकेनिकल और आर्गोनॉमिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो इस उम्र के बच्चे विकास के दौर से गुजर रहे होते हैं। ऐसे में उनमें रीढ़ की चोट की आशंका अधिक होती है, जिसका बुरा असर उनके वयस्क जीवन पर पड़ता है। इन समस्याओं से बचने के लिए फिजियोथेरेपिस्ट सबसे पहले माता- पिता और बच्चों को भारी बैग के नुकसान और समाधान के बारे में बताते हैं। साथ ही कुछ व्यायाम और रोचक गतिविधियां भी कराते हैं।

कुछ याद रखने योग्य जरूरी बातें:-

बैग का वजन :- बच्चों की स्कूली बैग का वजन उनके शरीर के वजन से 10 फ्रीसदी से अधिक नहीं होना चाहिए।

बैग का स्टाइल :- बैकपैक इस दृष्टि से करना बेहतर होगा। इससे बैग का वजन सामान्य रूप से वितरित हो जाता है। बैग बच्चे की पीठ पर टिका हो। बैग में एडजेस्टेबल स्ट्रैप, हिप स्ट्रैप, पैडिंग आदि हो ताकि बच्चा आराम महसूस कर सके।

लॉकर :- आजकल ज्यादातर स्कूलों में लॉकर होते हैं। बच्चों से इन्हें इस्तेमाल करने के लिए कहे इससे बैग का वजन कम होगा और बच्चे तंदुरुस्त रहेंगे।

अमित, एस.आई.ग्रेड-II



श्री.वीरेंद्र प्रताप,
सहायक निदेशक

"सही दृष्टिकोण का ध्यान"

गौतम बुद्ध की ध्यान की विधि पर आधारित प्रैक्टिकल मेडिटेशन तकनीक है जो कि बहुत ही प्रभावी है। इसमें विविध मेडिटेशन के प्रकार यथा: ईटिंग मेडिटेशन, वॉकिंग मेडिटेशन, आनापन(Anapan) मेडिटेशन, विपश्यना मेडिटेशन और अन्य मेडिटेशन की विषय-वस्तु जैसे ध्वनि, संवेदना, मैत्री भावना इत्यादि को ध्यान का केंद्र बनाकर ध्यान किया जाता है। तो मन को एकाग्र करने की अवधि बढ़ जाती है और धीरे-धीरे मन के विकार कम होते होते समाप्त होने लगते हैं। किसी भी प्रकार के ध्यान का मुख्य उद्देश्य ही मन को विकारों से मुक्त करना होता है और विकार मुक्त मन ही मनुष्य जीवन को मोक्ष की ओर अग्रसारित करता है।

यह विधि शुद्ध रूप से मन के शुद्धीकरण के लिए वैज्ञानिक तौर पर सिद्ध की हुई है और बहुत ही कारगर और प्रभावी है।

इसको आदरणीय धम्मपाल भंतेजी (Center for Right View Meditations) द्वारा कई स्तरों जैसे स्तर-1, स्तर-2, स्तर-3, स्तर-4 इत्यादि में धीरे-धीरे कदम दर कदम ऑनलाइन माध्यम से सिखाया जाता है।

इसके लिए सोशल मीडिया पर अधिसूचना जारी की जाती है और उपयुक्त दिशा- निर्देश जारी किया जाता है कि क्या करना है और क्या नहीं। सामान्यतया यह दो शनिवार-रविवार को शाम को 2-3 घंटे के लिये आयोजित होता है। यह कोर्स हिंदी, अंग्रेजी, तेलुगु भाषाओं में अलग- अलग समय पर आयोजित किया जाता है।

ध्यान का कोर्स (हिंदी)

कोर्स विषय: मन के चार पहलुओं को जानना और विकसित करना ताकि व्यक्ति सही दृष्टिकोण, सही सोच, सही भावनाएं, सही आत्मविश्वास, और सही एकाग्रता विकसित कर सके।

कोरोना काल में मन-शरीर समन्वय और सुदृढ़ता बढ़ाने में कारगर।

कोर्स के अन्य लाभ:

- तनाव और चिंता, भय, और अन्य मनोवैज्ञानिक मुद्दे जैसे साइकोसोमैटिक बीमारियों को संभालना, उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि का संतुलन से सामना करना।
- समग्र, सकारात्मक, रचनात्मक, और यथार्थवादी सोच विकसित करना।
- माइंड मैनेजमेंट और बेहतर निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना।

मैं पिछले लगभग एक वर्ष से इस विधि का अभ्यास कर रहा हूँ और धीरे-धीरे स्तर-3 का कोर्स तक पूरा कर लिया हूँ। इससे हमें अप्रत्याशित लाभ प्राप्त हो रहा है।

खास बात यह है कि इसमें किसी प्रकार का कोई धार्मिक प्रतिबंध नहीं है यह सिर्फ और सिर्फ मानसिक शुद्धीकरण की बहुत ही व्यवहारिक और प्रभावी विधि है।

मेरा इस कोर्स की जानकारी को साझा करने का एक ही उद्देश्य है कि इससे जो लाभ मुझे मिल रहा है उससे हमारे अपने अन्य लोग भी लाभान्वित हो सकें।

भवतु सब मंगलम्

वीरेंद्र प्रताप

सहायक निदेशक

जनगणना कार्य निदेशालय

महाराष्ट्र, मुंबई

ई-ऑफिस और फाईल – एक दीर्घ कथा



श्री.संतोष एन. पायस,
उपनिदेशक

स्थल – जनगणना निदेशालय महाराष्ट्र का मुख्यालय बेलार्ड इस्टेट मुंबई।

काल – जनवरी 2021, शनिवार की सुबह।

जनगणना निदेशालय महाराष्ट्र का संचालन (परिचालन) बेलार्ड इस्टेट स्थित मुख्यालय के साथ साथ सानपाडा और मुलुंड स्थित अन्य दो कार्यालयों से होता है। यह सभी कार्यालय एक दूसरे से लगभग 30 – 35 कि. मी. की दूरी पर हैं।

जनवरी, 2021 में जनगणना निदेशालय महाराष्ट्र में ई-ऑफिस के परिचालन के लिए सारे अनुभागों से सभी फाईल को स्कैन करने हेतु इकट्ठा किया गया है। यह पहला अवसर था कि सारी फाईल एक दूसरे से मिल रही थी। लेकिन उनके मन में डर भी था, क्योंकि स्कैनिंग के बाद उन्हें हमेशा के लिए मिटाया जाएगा और वह केवल कुछ दिनों की मेहमान हैं। तो सभी अनुभागों की फाईल्स ने इसका विरोध करने के लिए अपने अपने अनुभाग से नेता चुना और उस नेता को निर्णय लेने का अधिकार प्रदान किया।

कार्यालय में मेरे अलावा कोई नहीं था, किंतु मुझे कुछ अजीब सी आवाजें सुनाई दे रही थीं। मैंने ध्यान से देखा तो सारे अनुभागों की फाईल्स की मीटिंग चल रही थी। इसमें शामिल पात्र थे प्रशासन (प्र), जनगणना (ज), एनपीआर (एन), एसआरएस और सीआरएस (एस), मानचित्र अनुभाग (मॅ) और डीडीई (डी)।

मीटिंग की अध्यक्षता (प्र) कर रहे थे और चर्चा चल रही थी।

(प्र) : निदेशालय के इतिहास में शायद यह पहला ही अवसर है जब सारे अनुभागों की फाईल एक ही जगह एक साथ इकट्ठा की गयी हैं। मुंबई में जगह की कमी के कारण पहले से सारे अनुभाग अलग-अलग जगहों से ही कार्य करते थे। तो हर कोई अपने-अपने अनुभाग की फाईलों के साथ उन्हीं जगहों पर रहता था।

(ज), (एन), (एस) और (मॅ) एक ही सुर में : भाई (प्र) हमें तो नियंत्रण अधिकारी के मान्यता हेतु हमेशा से एक जगह से दूसरी जगह बहुत घुमना पड़ा है।

(डी) : अब की बार ई-ऑफिस के परिचालन के लिए सारे अनुभागों से सभी फाईल को स्कैन करने हेतु इकट्ठा किया गया है और ई ऑफिस के सुचारु परिचालन के बाद हमें घुमना नहीं पड़ेगा।

(प्र) (चिंतित स्वर में) : साथियों, यह बहुत ही कठिन समय आ गया है। ई-ऑफिस के परिचालन के लिए सारे अनुभागों से सभी फाईल को स्कैन किया जाएगा और बाद में हमें हमेशा के लिए मिटाया जाएगा, हम केवल कुछ दिनों के मेहमान हैं। भाई (डी) आप तो शुरु से सी.डी., पेन ड्राइव, हार्ड डिस्क, ई-मेल आदि माध्यमों से परिचित हैं। तो आप ही इस गुत्थी को सुलझाओ।

(डी) : साथियों इसमें चिंता का कोई कारण नहीं है। यह तो सृष्टि का नियम है। समय के साथ हमें बदलना होगा वरना हम तो वैसे भी किसी काम के नहीं होंगे।

(प्र) (प्रश्नवाचक भाव से) : वह तो ठीक है, लेकिन इससे क्या फायदा है?

(डी) : साथियों ई-ऑफिस के बहुत फायदे हैं। एक बार ई-ऑफिस में काम सुचारु रूप से शुरू होने के पश्चात कागज कम मात्रा में लगेगे, पेड़ और निसर्ग (पर्यावरण) का संवर्धन होगा। ई-हस्ताक्षर के माध्यम से पत्राचार होंगे, तो प्रिंट आउट कम होंगे। अतः प्रिंटर टोनर के कारण होने वाला कार्बन उत्सर्जन कम होगा। ई-मेल द्वारा पत्र भेजा जाएगा तो पोस्ट से पत्राचार भेजने का खर्च कम होगा और समय की भी बचत होगी।

(सारे अनुभागों के नेता विचार विमर्श करके...सहमति बनाते हैं। “बात तो सही लगती है।”)

(प्र) (थोड़ी सहमति जताकर) : यहाँ फायदे तो ठीक हैं। लेकिन हमारा क्या फायदा होगा?

(ज), (एन), (एस) और (मॅ) एक ही सुर में : भाई (प्र) आप का तो ठीक है आप शुरू से मुख्यालय में ही विराजमान हैं। लेकिन हमें तो हमारे अनुभागों के साथ कई बार एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता है। सन 1961 की जनगणना में हमारी शुरुआत मंत्रालय मुंबई में बैरकों में हुई। उसके पश्चात हम टोपीवाला बिल्डिंग मुलुंड में गए। बाद में हमें फोर्ट स्थित सावला चेंबर बिल्डिंग में भेजा गया। लेकिन हमारे कुछ साथी कुछ समय के लिए चेंबूर स्थित बेस्ट आवास में गए थे वह बाद में हमसे जुड़ गए फिर हम सारे क्रॉफर्ड मार्केट स्थित भीड़-भरे मोहता मार्केट बिल्डिंग में आए। वहाँ से हम सभी सानपाड़ा स्थित एम.टी.एन.एल. बिल्डिंग में गए। अब फिर से हम बिछड़ गए कुछ एम.टी.एन.एल. बिल्डिंग, सानपाड़ा में ही रहे तो कुछ मुलुंड स्थित टी-वॉर्ड बिल्डिंग में शिफ्ट हो गए।

इतनी बार शिफ्टिंग में हमारी कई फाईलों का नुकसान भी होता था। कुछ फाईलों के कवर फटते थे तो कुछ फाईलों के पन्ने लेकिन शिफ्टिंग के बाद हमारी फिर से मरम्मत करके हमें फिर से जोड़ा जाता और कार्य में लाया जाता, और तो और हमें नियंत्रण अधिकारी की मान्यता हेतु हमारे अनुभागों से मुख्यालय आना पड़ता है। कई बार चपरासी हमें बहुत संभालकर लाने की जी-जान कोशिश करते हैं, लेकिन मुंबई लोकल से सफर करते समय भीड़ में हम कई बार धक्के खाते हैं, कुचले जाते हैं, मरोड़े जाते हैं। हमें जो तकलीफ होती है इसका अंदाजा केवल हमें ही है। नियंत्रण अधिकारी के मान्यता के बाद जब तक हमारे अनुभाग से कोई चपरासी हमें वापस नहीं ले जाता तब तक मुख्यालय के किसी एक कोने में हम बहुत ही असहज महसूस करते हैं। पता नहीं हमारा यहाँ रहना कितना दिन होगा “एक दो दिन का हो या कभी कभी हफ्ते भर का”। अलग से हम हमारे सही जगह पहुँचेंगे या नहीं इसके लिए हम हमेशा चिंतित रहते हैं।

(डी) : भाई यह सारी परेशानियाँ ई-ऑफिस के परिचालन से हमेशा के लिए खत्म हो जाएंगी। अभी किसी भी अनुभाग से फाईल ईलेक्ट्रॉनिक माध्यम से तुरंत और सहज रूप से मुख्यालय में आएंगी और काम के पश्चात तुरंत उसी माध्यम से अपने-अपने अनुभाग में वापस जाएंगी। किसी का भी सफर कष्टदायी नहीं होगा। समझ लो हवाई जहाज की आरामदेय यात्रा करेंगे हमारे सब साथी।

(प्र) (थोड़ी असहमति से) : भाईयों और बहनों आप थोड़ा सब्र रखिए। जल्दी ही हमारे निदेशालय के सारे अनुभाग एक ही जगह एक ही बिल्डिंग में शिफ्ट होने वाले हैं। फिर सबका सफर अच्छा और अतिशीघ्र होगा।

(ज) और (मॅ) : भाई (प्र) आपके साथियों की बात अलग है। आपको एक ही शेल्फ में ज्यादा समय नहीं रहना पड़ता। आप तो हमेशा चलायमान रहते हैं। लेकिन हमारे अनुभाग के कई साथी दस-दस साल एक ही शेल्फ में

एक दूसरे के उपर लदे रहते हैं। वैसे तो हम धूल से या दीमक से परेशान न हों इसका सारा ध्यान निदेशालय तो लेता है। लेकिन सालों तक एक दूसरे पर लदे होने के कारण हमारे पन्ने एक दूसरे से चिपक जाते हैं। बहुत सालों बाद हमें निकालो तो कई पन्ने फट जाते हैं, कई पन्नों पर लिखी स्याही फीकी पड़ जाती है। पंच होल से टैग निकलने के कारण कई पन्ने खुल जाते हैं।

(डी) : साथियों यह समस्या ई-ऑफिस के परिचालन से हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी। अगर आपका आना-जाना बहुत दिनों तक या सालों तक होने वाला नहीं है, तो ई-ऑफिस में संबंधित अधिकारी आपको सम्मान से सही कारण लिखकर “पार्क” करेंगे। हर छह महीने बाद संबंधित अधिकारी को “पार्क” की गयी फाईल्स का विवरण दिया जाएगा। और उसकी समीक्षा करके संबंधित अधिकारी आपको उसी सम्मान के साथ “पार्क” करने की अवधि बढ़ाएगा या आपको फिर से संचालन में लाएगा।

(प्र) (थोड़ी नाराजगी से) : साथियों आपको हमारे अनुभाग की फाईलों का हमेशा होने वाला आना-जाना तो दिखता है। लेकिन हमारी परेशानियाँ नहीं दिखतीं। हमारी फाईलों पर कई बार बहुत से महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं। तो वरिष्ठ अधिकारियों की सुविधा के लिए कई पुराने पत्राचारों पर शीघ्र, अतिशीघ्र, महत्वपूर्ण ई. फ्लैग (निशानी) लगानी पड़ती है। पहले तो बाबू अपने हाथ से पिन की सहायता से निशानी लगाते थे। तो हमारे पन्नों पर दो-तीन जगह पर छेद बनते थे। इसके बाद स्टेपलर से निशान लगने लगे, तो और गहरे जख्म होने लगे। अब चिपकाने वाली रंग-बिरंगी निशानी आई, तो हमारी परेशानियाँ कुछ कम हुईं। बाबू फाईल पर तत्परता से निशानी तो लगा देते हैं। पर निर्णय होने के बाद निशानी हटाना भूल ही जाते हैं। तो सालों से लगी निशानियों के कारण हमारा हुलिया भी आजकल बिगड़ गया है।

(डी) : साथियों यह समस्या भी ई-ऑफिस के परिचालन से हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी। ई-ऑफिस में संबंधित अधिकारी को अगर कुछ निशानी लगानी है, तो वह “रेफरंस” टूल की सहायता से नोटिंग एवं करस्पॉन्डेन्स दोनों विभाग में आराम से ई-निशानी लगा सकता है। यह चुभेंगी भी नहीं और आपका हुलिया भी नहीं बिगाड़ेगी।

(ज), (एन), (एस) और (मै) एक ही सुर में : साथियों कई बार हम जब एक साथ नियंत्रण अधिकारी की मेज पर मान्यता हेतु रहते थे, तो कभी-कभी हमने देखा है कि (प्र) और उनके साथियों को अधिक प्राथमिकता होती थी। हमारे अनुभाग की फाईल कभी-कभी नियंत्रण अधिकारी की मेज पर नहीं पहुंचती या फिर फाईल के मलबे में सबसे नीचे चली जाती, तो अनुभाग से भागम-भाग करके मुख्यालय के चपरासी को हमारी फाईल ढूँढकर प्राथमिकता से सही अधिकारी के पास पहुंचाये, यह बताना पड़ता है।

(डी) : साथियों यह समस्या ई-ऑफिस में नहीं होगी। अभी सभी अनुभागों से संबंधित अधिकारी अपने-अपने विषयों के प्राथमिकता अनुसार फाईल पर “तत्काल” (रंग), “अतिशीघ्र” (रंग) और “शीघ्र” (रंग) ऐसे चिन्ह लगाकर नियंत्रण अधिकारी की मान्यता के लिए मुख्यालय भेज सकते हैं। भेजी हुई फाईल किस अधिकारी के “इनबॉक्स” में प्रलंबित है। यह जानकारी संबंधित अधिकारी को अपने ई-ऑफिस में मिल जाएगी। यह फाईल

आगे बढ़ाने के लिए अभी संबंधित अधिकारी एक-दूसरे के साथ सीधे बात कर सकते हैं। फाईल का संचालन ई-ऑफिस में आसानी से दिख जाने के कारण दौड़-भाग से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

(प्र) (थोड़ी नाराजी से) : साथियों आपकी इस बात से मैं असहमत हूँ। कई बार हमारे अनुभाग की फाईलें भी जाने-अंजाने में यहाँ-वहाँ रह जातीं। कभी-कभी बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य के लिए उनकी शीघ्र जरूरत होती थी। तो फिर सारे कर्मचारी फाईल की खोज में जुट जाते थे। उस समय मेरे साथी फाईलें अपनी जगह से उन्हें आवाज देकर कहती “भाई आप मुझे यहाँ-वहाँ सारी जगह खोज रहे हो लेकिन मेरी तरफ ध्यान तो दो। मैं यहीं हूँ इस अलमारी में, इस शेल्फ पर या इस मेज पर।” पर हमारी कोई न सुनता। बहुत कोशिश के पश्चात भी फाईल न मिलने पर एक “सर्च मेमो” निकालते थे। बहुत कठिनाई के बाद कुछ फाईलें मिलती तो कुछ अंत समय तक मिलती ही नहीं। इसमें कार्यालय का महत्वपूर्ण समय नष्ट होता।

(डी) : साथियों फाईल खोजना ई-ऑफिस में बहुत ही आसान हो गया है। आपको केवल जो फाईल खोजनी है, उसका विषय या नंबर पता होना चाहिए। बाकी फाईल खोजने का काम चंद मिनटों में पूरा करके आप पता कर सकते हैं यह फाईल कहाँ है? और प्रावधानों के अनुसार आप फाईल को “पुल अप” या “वापस” भी ले सकते हैं। तो संबंधित अधिकारी अब फाईल खोज में आत्मनिर्भर हो जाएंगे।

(प्र) (सभी से) : साथियों यह भी सोचो कि हमारे निदेशालय में विषय के अनुसार हर फाईल की आयु मर्यादा होती थी। किसी फाईल की आयु 10 साल, तो किसी की 20 साल, किसी की 30 साल तो गिनी-चुनी फाईलों को अमर रहने का वरदान रहता था।

(डी) (सभी से) : साथियों पहले इतनी बड़ी संख्या में फाईलों के रख-रखाव के लिए निदेशालय को पर्याप्त जगह का प्रावधान करना पड़ता था। उपर से धूल, मिट्टी, दीमक इत्यादि से बचाव के लिए उपाय करने पड़ते। यह बड़ा कठिन कार्य था। तो हर फाईल के विषयानुसार उसकी प्राथमिकता तथा आयु सुनिश्चित की जाती थी। और नियमानुसार फाईल को नष्ट करते थे। लेकिन ई-ऑफिस में फाईलों के रख-रखाव के लिए जगह और खर्च दोनों में बहुत बचत होने वाली है। तो अभी फाईल को नष्ट करने के बारे में सोच-विचार कर रहे हैं।

(ज) और (मॅ) : साथियों कभी-कभी हमने अधिकारियों के साथ दिल्ली स्थित मुख्यालय की यात्रा भी की है। इस यात्रा के दौरान हमें अन्य निदेशालयों के फाईलों के साथ गुप्तगू करने का अवसर मिला। अपने इस विशाल देश में हर निदेशालय की स्थिति अलग-अलग है। चर्चा में यह पता चला कि कभी-कभी प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़, भूकंप या अन्य किसी कारण से हमारी जान को खतरा भी हो सकता है। इसी तरह कार्यालय में आग, शेल्फ गिरना या अन्य ऐसी किसी दुर्घटना के कारण भी हमारी जान को खतरा हो सकता है।

(डी) (सभी से) : साथियों हम सारे ई-ऑफिस में सेंट्रल सर्वर में पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे। और किसी कारणवश सेंट्रल सर्वर में कुछ तकनीकी खराबी हुई तो भी हमारी प्रतियाँ अन्य सर्वर में सुरक्षित रहेंगी। और हमें तुरंत सेंट्रल सर्वर में स्थापित किया जा सकता है।

(सारे अनुभागों के नेता “शायद हम सारे ही अमर हो जाएँ” इस खुशी में झुमते हुए।)

(प्र) (ज), (एन), (एस) और (मॅ) सारे एक साथ (डी) से : भाई (डी) अभी तक तो आपने हम सब की शंकाओं का हल किया, हमारे सभी प्रश्नों के उत्तर दिए। उससे यह तो प्रतीत होता है कि ई-ऑफिस समय की मांग है। और इसके परिचालन से कार्यालय में सभी कार्य बहुत संतोष जनक होंगे। हो सकता है हम सबका रख-रखाव, हमारा सफर और हमारे रहन-सहन में बहुत ही सुधार होगा, किंतु हम सभी आपके उत्तरों से पूरी तरह सहमत नहीं हैं।

(डी) : वह क्यों भला?

(प्र) (ज), (एन), (एस) और (मॅ) सारे एक साथ (डी) से : भाई (डी) सालों से हमें अलग-अलग अधिकारियों ने बहुत प्यार और अपनापन दिया है। ज्यादातर अधिकारी अपने मोतियों जैसे सुंदर अक्षरों से नोटिंग करते थे और अपनी एक अलग अंदाज से हस्ताक्षर करते थे। हां कभी-कभी किसी अधिकारी का अक्षर इतना सुंदर नहीं होता था। फिर भी वह लिखे तो पन्ने अपनापन महसूस करते थे। नियंत्रण अधिकारी के हस्ताक्षर सालों तक अपनी छवि छोड़ते थे। ज्यादातर हमें बहुत प्यार से संभाल लिया जाता था। लेकिन कभी-कभी हमें गुस्से से पटका भी जाता तो भी हमारी कोई शिकायत नहीं होती। क्योंकि हम जानते थे इसमें हमारी कोई गलती नहीं थी। यह एक पल का गुस्सा है और फिर से हमें प्यार ही मिलने वाला है। जब सारे अनुभागों की फाईलें नियंत्रण अधिकारी की मेज पर पहुंचती तो कुछ पलों के लिए उन्हें एक दूसरे का अहसास होता। फिर से अपने-अपने अनुभागों में जाना तय था। लेकिन यही यादगार समय होता था। अब न वह मोतियों जैसे सुंदर अक्षर होंगे, न वह अलग अंदाज के हस्ताक्षर, न ही होगा अपनेपन का स्पर्श और वह प्यार। हम तो पहले भी चलते थे अब भी चलेंगे लेकिन अब सब कुछ यांत्रिक हो जाएगा। वह अपनापन वह प्यार वह स्पर्श हमेशा के लिए नष्ट हो जाएगा।

(डी) : इस प्रश्न का मैं क्या उत्तर दूँ भला?

श्री संतोष एन. पायस,
उपनिदेशक,
जनगणना कार्य निदेशालय,
महाराष्ट्र, मुंबई.



श्री.विक्रम लोखंडे,
एम.टी.एस

आज की बचत, कल की सुरक्षा

बचत एक ऐसी आदत है, जो आज अगर अपना ली जाए, तो कल आवश्यकता पड़ने पर आपका सबसे बड़ा सहारा बन सकती है। बचत को सिर्फ पैसे से जोड़ कर न देखें, यह जीवन के हर पहलू में भावी जीवन का सशक्त आधार बन कर आपकी सहायक हो सकती है। धार्मिक रूप से देखें, तो आज आप ईश्वर की शरण लेते हैं, तो कल ईश्वर आपको मुश्किलों से तार लेंगे, ये विश्वास आप पाते हैं।

सामाजिक रूप से देखें, तो आज आप दूसरे की मदद करते हैं, तो एक तरफ आप समाज में इज्जत पाते हैं और बहुत ही जादुई तरीके से यही मदद आपकी जरूरत के समय आप तक लौटती है। तभी तो मुश्किलों से बच निकलने पर आम तौर पर सुनने को मिलता है, कोई पुण्य काम आ गया। रिश्तों के मामले में देखें, तो आज आप अपनों के काम आते हैं, तो कल मुसीबत पड़ने पर आपके अपने आगे बढ़कर आपका हाथ थाम लेते हैं। कुल मिलाकर बचत चाहे जिस मद में की जाए, आपके लिए फायदेमंद ही साबित होती है। वैसे बचत का आम अभिप्राय पैसे को जोड़कर रखने के लिए होता है।

तो आज पैसे की बचत पर ही बात करते हैं और एक रोचक कहानी की चर्चा करते हैं - किसी समय एक नगर में एक धनाढ्य सेठ रहता था। उसके पास इतना धन था कि राज्य का कोषागार भी मुकाबला नहीं कर सकता था। सेठ के पास जितना धन था, उससे बढ़कर उसके चर्चे थे। सेठ की पत्नी सीधी-सादी थी। उनके दो बेटे, दो बहुएं थीं। परिवार हर तरह से सुखी और संपन्न था। सेठानी का पूजा-पाठ में बहुत मन रमता था। उनकी एक आदत थी कि रोज पूजा से उठने के बाद वे सबसे पहले गोबर का एक उपला बनाती और शाम को सूखने पर उसे एक कमरे में रख देतीं। इन उपलों का इस्तेमाल वे जलाने में कभी ना करतीं। इस तरह उनके बनाए उपलों से दो कमरे भर चुके थे। सभी उनकी इस आदत से परेशान थे, पर वे किसी की ना सुनतीं।

सेठ के विरोधियों ने राजा के कान भर दिए

कहते हैं कि समय का पहिया सदा एक सा नहीं चलता। एक बार सेठ के विरोधियों ने राजा के कान भर दिए कि वह धन के बल पर राज्य हड़प लेने की योजना बना रहा है। राजा ने तुरंत ही सेठ की सारी संपत्ति कुर्क करने के आदेश दे दिए। राज्य कर्मचारी घर का सारा सामान तक उठा ले गए। इस घटना से सेठ टूट गए, पर सेठानी हमेशा यही कहती कि थोड़ा धीरज रखिए। समय हमेशा एक सा नहीं रहता। इस घटना को छह महीने बीत गए, इस बीच घर के सारे खर्च की व्यवस्था सेठानी ही करती रही। एक दिन उन्होंने सेठ और बेटे-बहुओं को बुलाकर कहा कि अब हमारे विरोधी हमें भूल गए हैं। अब सही वक्त है, हमें अपना व्यापार वापस शुरू करना चाहिए। उसकी बात पर सेठ हैरान रह गए और बोले कि व्यापार के लिए पैसा चाहिए होता है। हमें तो यह तक नहीं पता

कि घर का खर्च कैसे चल रहा है और तुम व्यापार की बात करती हो। सेठानी ने हंसकर कहा कि पैसे मैं देती हूँ ना।

बंद कमरों से दो उपले उठा लाओ

इसके साथ ही सेठानी ने अपनी दोनों बहुओं को चाभी देते हुए कहा कि बंद कमरों से दो उपले उठा लाओ। दोनों बहुएं दो उपले उठा लाईं तो सेठानी ने उसे दोनों बेटों को देते हुए कहा कि बेटा, इसे तोड़ दो। दोनों बेटों ने जब उपले तोड़े, तो उसमें से सोने की एक-एक मोहर निकली। सोने की मोहर देख सब हैरान रह गए। अब सेठानी ने कहा कि समझ में आया? मैं उपले क्यों बनाती थी? क्यों तुम लोगों के नाराज होने पर भी मैंने उपले बनाना बंद ना किया? कैसे हमारे घर का खर्च बिना संकट चल रहा है? बुरा वक्त कभी बता कर नहीं आता, इसी दिन के लिए मैं बचत करती रही। सेठ, दोनों बेटों और बहुओं के मुंह खुले के खुले रह गए। उन्हें अब समझ आया कि गोबर के उपले को किसी काम का ना मान राज्य कर्मचारियों ने कुर्क भी ना किया और अब उनके पास दो कमरे भरकर सोने की मोहरें थीं।

बचत का पहले ध्यान रखेंगे

सेठानी की चतुराई देख सेठ खुशी से रो पड़े और बहू-बेटों ने उनके पैर पकड़ लिए। सबने वचन दिया कि अब से वे भी बचत का पहले ध्यान रखेंगे। उसके बाद थोड़ा-थोड़ा धन निकालकर परिवार ने छोटे स्तर पर व्यापार वापस शुरू किया और शीघ्र ही अपना वैभव पा लिया।

एक-एक रूपया जोड़ेंगे तो कल खुश रहेंगे

तो देखा आपने, सेठानी की बचत की आदत ने कैसे पूरे परिवार को भंवर से निकाल लिया। यही बचत का मुख्य प्रभाव है। आज आप एकएक रूपया जोड़ेंगे-, कल वह आपके लिए एक बड़ी संपत्ति के रूप में सामने आएगा और आपको मुश्किल में ऐसे बचा लेगा कि आप भी हैरान रह जाएंगे। तो आज से ही बचत शुरू करें, चाहे कम या ज्यादा, पर बचाएं और बचा सकें तो जीवन के हर पहलु में सब कुछ जोड़ते चलें। क्या पता, कल किस चीज की जरूरत पड़ जाए और किस वक्त क्या आपके काम आ जाए।

विक्रम शं. लोखंडे
जनगणना कार्य निदेशालय,
महाराष्ट्र, मुंबई

वित्तीय जोखिम से लेकर वित्तीय सुरक्षा तक..!



श्री.गणेश बरडे, कनिष्ठ
परामर्शदाता

भारत एक अनोखा देश है। यहाँ पर विविध भाषा, रंगरूप, संस्कृति, परंपरा, उत्सव, समारोह, धर्म-जाति, विभिन्नताओं संगम है। और इस देश में जनगणना को लेकर वित्तीय सुरक्षा एक गंभीर विषय है। आओ चले, हम इस विषय को गंभीरतापूर्वक उदाहरण के साथ समझते है।

बीमा का अर्थ :-

जोखिम और अनिश्चितता जीवन का अभिन्न अंग हैं। जीवन में तेजी से वृद्धि के कारण ये जोखिम और अनिश्चितता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है।- मनुष्य असमय मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। वह ,आग से संपत्ति का विनाश ,दुर्घटना समुद्र ,बाढ़ , भूकंप और कई अन्य कारणों से पीड़ित हो सकता है। जब भी अनिश्चितता होती है-तो जोखिम के साथ , साथ असुरक्षा भी होती है।

बीमा का हमारे जीवन में क्या महत्व है? हम में से ज्यादातर लोग आर्थिक रूप से इतने मजबूत नहीं होते हैं कि कोई दुर्दैवी घटना के घटित होने पर उसके नुकसान की भरपाई कर सकें। बहुत बार ऐसा देखा गया है कि परिवार के मुखिया की मृत्यु होने पर बाकी का परिवार आर्थिक संकट में आ जाता है।

जिसके कारण उसको अपना घर तक बेचना पड़ जाता है। और बाल-बच्चे रास्ते पर आ जाते हैं। लेकिन जिन लोगों के पास जीवन बीमा जैसी पॉलिसी योजना होती है, उन्हें बीमा कंपनी द्वारा आर्थिक मदद मिल जाती है। जिससे वह अपना गुजारा कर सकते हैं। इसी तरह मोटर इंश्योरेंस पॉलिसी में जब हमारा वाहन दुर्घटना में किसी दूसरे व्यक्ति को या उसकी संपत्ति को नुकसान पहुंचाता है तो कानूनन हमें उस व्यक्ति के नुकसान की भरपाई करनी पड़ती है। जो कि हमारी ओर से मोटर बीमा कंपनी कर देती है। लेकिन जिन लोगों के पास मोटर बीमा पॉलिसी नहीं होती है। उनको नुकसान की भरपाई खुद की जेब से करनी पड़ती है।

यहां नीचे हम उदाहरण की मदद से बीमा का महत्व समझने की कोशिश करते हैं।

मान लीजिए, **गणेश** अपने परिवार में कमाने वाला एकमात्र सदस्य है। और उसके दो बच्चे, और पत्नी हैं। गणेश की मासिक आय ₹ ३०,००० हजार है। जिससे वह अपने परिवार का गुजारा अच्छे से कर पा रहा है। लेकिन उसके पास जीवन बीमा पॉलिसी नहीं है। अब एक दिन गणेश की एक सड़क दुर्घटना

में मृत्यु हो जाती है। अब क्या होगा अब परिवार ?
में कमाने वाला व्यक्ति नहीं रहा और उसे जो हर
महीने ₹ ३०,००० हजार आते थे, वह आने बंद हो
जाएंगे।

जिसकी वजह से सबसे पहले बच्चों की
पढ़ाई पर असर पड़ेगा और उसके बाद घर का गुजारा
करना मुश्किल हो जाएगा। अब गणेश की पत्नी को
मजबूरन कोई नौकरी करनी पड़ेगी लेकिन हो सकता
है कि वह इतना न कमा पाए जितना गणेश कमाता
था। अभी जब तक गणेश के बच्चे बड़े होकर नौकरी
नहीं करने लग जाते तब तक गणेश की पत्नी को
बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। हो सकता
है कि वह अपने बच्चों को अच्छी पढ़ाई न करा पाए।
जिससे उसके बच्चों को अच्छी नौकरी मिलने के
कम मौके मिलेंगे। अभी ऊपर दिये गये उदाहरण से
आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि गणेश बहुत
अच्छी कमाई कर रहा था। लेकिन उसने किसी दुर्दैवी
घटना के बारे में कभी सोचा ही नहीं और उसके लिए
अपने परिवार को कभी सुरक्षित करने के लिए भी

नहीं सोचा जिससे उसका परिवार आर्थिक संकट में
आ गया।

अभी दूसरी तरफ अगर गणेश ने एक जीवन
बीमा पॉलिसी (योजना) ले रखी होती तो परिवार का
दुख तो कम नहीं होता लेकिन उसको आर्थिक संकट
का सामना न करना पड़ता। बीमा से मिलने वाली
दावा राशि से परिवार अच्छी जिंदगी बिता सकता
था। इसी लिये हमें बीमा का महत्त्व समझना चाहिये,
और अपने परिवार को सुरक्षित करना चाहिये।

क्योंकि हमारी सरकार हर दस सालो में
भारत की जनगणना करवाती है। और राष्ट्र को समृद्ध
से लेकर सुरक्षित करवाती हैं। जिस तरह से भारत की
जनगणना जरूरी है.....!! उसी तरह से बीमा बहुत
जरूरी है...!!! इससे हमारे परिवार को सुरक्षा मिलती
है। और वित्तीय रूप से हमारा परिवार भविष्य के लिए
सक्षम और मजबूती से उभरकर खड़ा होता है जिस
तरह देश खड़ा हो रहा है।

श्री गणेश के बरडे,
कनिष्ठ परामर्शदाता (प्रशासन)



श्री.विक्रम लोखंडे ,
एम.टी.एस

बढ़ती महंगाई

आज हमारे समक्ष अनेक समस्याएँ हैं, जिनमें से बढ़ती महंगाई भी एक है। बढ़ती महंगाई की समस्या प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करती है, जिसके कारण गरीब एवं निम्न मध्यम वर्ग के लोगों को आवश्यक चीजों में भी कटौती करनी पड़ती है।

दिन प्रतिदिन बढ़ती महंगाई से ग्रस्त व्यक्ति को मजबूर होकर अपनी जरूरतों से समझौता करना पड़ता है। एक आम व्यक्ति को अपने प्रतिदिन के जीवन में उपयोग होने वाली चीजों के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है और ऊपर से बढ़ती महंगाई उसे और परेशान कर देती है।

बढ़ती महंगाई की एक वजह कालाबाजारी होती है। कुछ लोग अपने स्वार्थ के चलते प्रचुर मात्रा में अनाज के स्टॉक को अपने गोडाउन में सस्ते दामों पर खरीद कर रख लेते हैं और बाद में जब उस अनाज का मूल्य बहुत अधिक बढ़ जाता है तो उसे ऊँचे दामों पर बेच देते हैं। उनके इस प्रकार से लाभ कमाने का परिणाम अनेकों गरीबों एवं निम्न मध्यम वर्ग के लोगों को सबसे अधिक भुगतना पड़ता है।

कालाबाजारी को रोकने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए और जब तक सरकार इसे रोकने के लिए कड़े कदम नहीं उठाएगी, तब तक ऐसा चलता ही रहेगा। आम जनता कालाबाजारी को रोकने के लिए एक कदम यह उठा सकती है कि जिस अनाज का मूल्य बहुत अधिक बढ़ जाए, उसे न खरीदें।

जब किसी अनाज की फसल की पैदावार पर्याप्त मात्रा में नहीं हो पाती है, तो उससे भी उसका मूल्य अपने आप बढ़ जाता है। यह भी अनाज के महंगे होने का एक कारण होता है।

इन सभी के अतिरिक्त भ्रष्टाचार भी महंगाई के बढ़ने का एक प्रमुख कारण है। सरकार को भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भी कठोर कदम उठाने चाहिए, जिससे लगातार बढ़ रही महंगाई पर अंकुश लगे।

बढ़ती महंगाई का असर सबसे अधिक उस गरीब व्यक्ति पर पड़ता है, जिसकी प्रतिदिन की आय सौ रुपए भी नहीं होती है। परिस्थिति तब और भी अधिक विकट हो जाती है, जब उसका पूरा परिवार केवल उसी व्यक्ति पर आश्रित होता है। ऐसे में व्यक्ति आवश्यक सामान को खरीदने में भी असमर्थ हो जाता है।

बढ़ती महंगाई की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और प्रतिदिन की जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे लोगों को इसने सबसे अधिक परेशान कर रखा है। अगर आम आदमी अपनी जरूरत के सामानों में भी कटौती करेगा तो यह एक अत्यंत ही चिंता का विषय है और इस पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

विक्रम शं. लोखंडे,
जनगणना कार्य निदेशालय,
महाराष्ट्र, मुंबई

महा-ई दर्पण

भारत में ई-गवर्नेंस



श्री.जितेंद्र कुमार,
भूगोलवेत्ता

ई-गवर्नेंस का सामान्य परिचय-

ई-गवर्नेंस को डिजिटल प्रशासन या ऑनलाइन प्रशासन भी कहा जाता है। इसका तात्पर्य इस बात से है कि सरकार द्वारा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग नागरिकों और अन्य सरकारी सेवाओं के बीच सूचनाओं और सेवाओं के विनिमय के लिये किया जाता है।

ई-गवर्नेंस का इस्तेमाल विधायिका, न्यायपालिका या कार्यपालिका द्वारा आंतरिक कार्यकुशलता को बढ़ाने, सरकारी सेवाओं के उत्तम संचालन-परिचालन या प्रजातान्त्रिक प्रशासन के सफल संचालन के लिए किया जा सकता है।

ई-प्रशासन का वितरण सरकार से नागरिक या सरकार से उपभोक्ता, सरकार से व्यवसाय और सरकार से सरकार को है। ई-प्रशासन से उम्मीद की जाती है कि कार्यकुशलता में बढोत्तरी होगी, सुगमता बढेगी, प्रशासन में पारदर्शिता आयेगी और सरकारी सेवाओं तक जनता की पहुँच में सुविधा होगी। ई-प्रशासन को ऑनलाइन प्रशासन या इन्टरनेट आधारित प्रशासन समझा जाता है, अनेक गैर-इन्टरनेट आधारित प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल इस काम के लिए किया जा सकता है, जैसे टेलीफ़ोन, फैक्स, एसएमएस तथा ब्लूटूथ अन्य प्रौद्योगिकी में शामिल हैं।

ई-प्रशासन पोषक विकास के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास तथा प्रयोग को प्रोत्साहित करता है। यह राष्ट्रीय सरकारों, क्षेत्रीय, अंतर्राष्ट्रीय तथा बहुदेशीय विकास संगठनों, संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों, शैक्षणिक और शोध संस्थाओं, सिविल सोसाइटी समूहों और निजी क्षेत्रों के बीच पारस्परिक सहयोग को बढ़ाने में सुविधाएं प्रदान करता है। यह जागरुकता बढ़ाकर, क्षमता का सृजन कर, तकनीकी सुझाव तथा सलाह देकर, शोध तथा विकास द्वारा, ज्ञान का आदान-प्रदान कर तथा भागीदारियां कायम कर, यह इस कार्य को करता है।

इसके द्वारा सरकार, इन्टरनेट पर सूचनायें तथा सेवायें प्रदान करती है, जिस से नागरिकों को सरकार से सम्पर्क करने का अवसर प्राप्त होता है, जो एक दशक पहले उपलब्ध नहीं था। इस से अनेक लाभ है जो निम्नलिखित हैं-

१. जैसे सरकार और नागरिकों के बीच वृहद सूचनाओं का आदान-प्रदान होना।
२. ई-मेल की आसान सुविधा से सरकार से बराबर संपर्क साधने का अवसर नागरिकों को मिल जाता है।
३. इन्टरनेट के प्रयोग से नागरिकों को अवश्य ही सरकार से संपर्क बनाने में सुविधा होती है।
४. इस के द्वारा उद्योग-उन्मुख सेवायें सरकारी और निजी ग्राहकों को प्राप्त हो जाती है।
५. विशेषज्ञों के माध्यम से ग्राहकों और स्टेक-होल्डरों में विश्वसनीयता बढ़ती है।
६. ई-प्रशासन न केवल उत्पादकता की संभावनाओं को बढ़ाता है, बल्कि भ्रष्टाचार के मूल कारणों को भी दूर करने में सहायता करता है।
७. इस के द्वारा नागरिकों को प्रमुख सुविधाओं औद्योगिक विकास, रोजगार आंकड़ा संरक्षण तथा मास-मीडिया को नियमित करने का सहयोग मिलता है।
८. ई-गवर्नेंस का छुआछूत जैसी वैश्विक कोरोना-१९ महामारी में बेहतर कारगर होना।

लोगों के पास इन्टरनेट आदि की सुविधायें प्राप्त नहीं हैं। और उनकी समस्याएं काफी ज्यादा हैं; ऐसी स्थिति में सरकार के ई-प्रशासन से समुचित लाभ संभव नहीं है।

बहुत कम लोग ही वेब या ई-मेल के माध्यम से सरकार से संपर्क साधना चाहते हैं। इन्टरनेट रखने वाले भी प्रायः फोन द्वारा ही सरकार से संपर्क साधना चाहते हैं।

विश्व के अनेक देशों में ई-प्रशासन की असफलता का कारण हिस्सेदारी के मध्य अपर्याप्त संचार साधनों के चलते सूचनाओं के आदान-प्रदान की कमी बताया गया है। हिस्सेदारों के बीच वैयक्तिक संपर्कों से काम चला लिया जाता है।

अंत में कहा जा सकता है कि ई-प्रशासन को लागू करते समय पर्यावरणीय, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा उपभोक्ता मामलों को ध्यान में रखना चाहिए। आय एवं अर्थव्यवस्था पर इसके पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखना तथा डिजिटल डिवाइड की बाधा को दूर कर इसे सफल बनाया जा सकता है।

जितेन्द्र कुमार
(भूगोलवेत्ता)मानचित्र अनुभाग

" मैं समय हूँ!..."

"मैं समय हूँ; हर समय आपके साथ हूँ, साथ रहूँगा
तथापि, इस घड़ी आप मुझे अपना काल ... मत होने दें,
आप घर पर रहिए तथा अपने परिजनों के साथ सुरक्षित रहिए
ये जो दौर है; दरवाजे पर दस्तक दे रहे संकट पर मात दें।"

" जिंदगी!... "

"जिंदगी के हर मोड़ पे
फूल और कांटे होते ही हैं,
कहीं तो वो जीवन के...
सुख दुःख के नज़ारे तो नहीं हैं ! "

" गुलज़ार!..."

"अपनी हर एक की जिंदगी
गुलिस्तां गुलज़ार जैसी ही है -,
बस..., हर एक के जिंदगी में
महकता गुल होना जरूरी है !"

" गुलज़ार!..."

"जिंदगी में अगर गम हो...
तो ' गुलज़ार ' को याद करना,
अगर खुशी हो जिंदगी में...
तो औरों की जिंदगी 'गुलज़ार' करना !"

" नज़र!..."

" एक नज़र झुकी हुई
खुशबू भरे हुए फूलों पर,
कुछ लम्हें मुस्कुराए यूं
मुस्कान भरी होंठों पर !"

" शहनाई!..."

"खन-खन खनकती है...
मेरे हाथों की ये चूड़ियां,



श्री.किशोर लाडू रासम,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

जैसी गूंज रही है बारात की
मेरे कानों में शहनाईयां !"

" राहत!..."

"राहत तो हमें आपसे तब मिली है
जब आपने हमारे हाँ में हाँ मिलाया,
और रौनक तो हमारे जीवन में तब फैली
जब हमने आपका दिल जो जीत लिया !"

" मन की बगिया!..."

"बारिश हो रही है झम झमा झम-
खिल उठा मेरे मन का आंगन,
उल्हासित हुई मेरे मन की बगिया
आज गंधित हुआ है मेरा जीवन ।"

" निगाहें!..."

"निगाहो से तेरी
मिली निगाहें मेरी हैं,
सच कहूँ तो मेरे हृदय में
तेरी ही प्रतिमा है ।"

" टूटते तारे..!"

"ये जगमगाते सितारे
आसमान में ही सही,
मेरे अरमानों के टूटते तारे
मेरे सपने ही सही !"

" अनजान!..."

"हमने किसी को चाहा
जाने अनजाने में,
मगर वो खुद अनजान रही
हमें पहचानने में !"

" नज़र!..."

"छुपा रही थी तू अपना चेहरा
हाथ के पंजों से,
छुप नहीं सका, तेरे आंखों का सुरमा
मेरी नज़रों से !"

" यादें!..."

"खोया-खोया सा रहता हूँ
जब भी तेरी याद आती है,
भूल जाता हूँ अपने आपको
जब तू सामने से गुजरती है !"

" सूरत !..."

"तेरे निखरे निखरे चेहरे पर
एक लाजवाब हँसी देखी,
भरे दिन के उजाले में
तेरी चाँद सी सूरत देखी !"

" मेहँदी!..."

"मेहँदी रंग लाई हाथ की
तेरे चेहरे पर जो छा गई,
और आपके हुस्न की रौनक
हमारे दिल पे जो भा गई !"

" एहसास!..."

"उसे एहसास हुआ होगा कि,
कोई तो हम पे मरता है,
लेकिन जिसपे मैं मरती हूँ....
वो हमसे क्यूँ जुदा-जुदा है !"

" अदा!... "

"हम फ़िदा है तेरे जुल्फों पर
जिन्होंने झुलाया अपने अदाओं पर,
वो अदाएं भी क्या अदा थी; वह तो...

वह तो हमारे लिए हसीन वादियाँ थीं !"

" खिला चाँद!..."

"जुल्फों का साया हटाकर
जब तुने देखा पलटकर,
लगा खिला चाँद सामने आया
घने बादलों से ओझल होकर !"

" ख्वाब!..."

"महक है उसके चेहरे पर
फूलों पर उसकी मुस्कान है,
सपने तो हमने देखे है; पर
ख्वाब तो उसके पूरे हुए हैं !"

" गुलाबी महक!..."

"आज हमें न गुलाब चाहिए
न गुलाबी तोहफा चाहिए,
बस काँटा चुभने के बाद भी
रूह में से गुलाबी महक आनी चाहिए ।"

जिंदगी के रंग कई रे



श्रीमती.स्वाती अह्लाड़,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

जो पीछे मुड़ के देखा तो ,
कुछ यादें बुला रही थीं ।
अब तक के सफर की
सारी बातें बता रही थीं ॥

कितनी मुश्किल राहें थीं ,
हम क्या-क्या कर गए ।
एक सुकून की तलाश में
कहाँ-कहाँ से गुजर गए ॥

कितने लोग मिले सफर में ,
कितने बिछड़ गए ।
जन्मों का साथ निभाने वाले ,
जाने किधर गए ॥

हर उम्र के सपने अलग थे ,
दृष्टिकोण अलग था ।
मकसद अलग था ,
मोल अलग था ॥

आईने में खुद को देख कर ,
रोज सोचती रहती हूँ ।
क्या खोया क्या पाया ,
अक्सर तोलती रहती हूँ ॥

उम्र के साथ-साथ ,
सोच बदलती रहती है ।
चाहत बदलती रहती है ,
खोज बदलती रहती है ॥

अब इस मुकाम पर,
एक ठहराव आ गया है।
मंजिल का तो पता नहीं,
पर पड़ाव आ गया है॥

बेचैन मन को राहत
अब मिलने लगी है।
समझौता कर लिया तो,
जिंदगी मुकम्मल लगती है ॥

ऐ ईश्वर तेरा धन्यवाद,
तुझसे कोई शिकवा नहीं है।
यहाँ सब थोड़े अधूरे से हैं,
किसी को पूरा मिला नहीं है ॥

बहुत सारी कट गई,
अब थोड़ी सी बची है।
बस यही जिंदगी है।
बस यही जिंदगी है ॥

महा-ई-दर्पण



श्री.किशोर लाडू रासम,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

‘लिरिक्स’ : ए भाय जरा देखके चलो ...

लिरिक्स (रायटर): श्री किशोर लाडू रासम दिनांक :21 सितंबर 2016

ए भाय ...

ए भाय, जरा देखके चलो

‘फेसबुक’ के साथ ‘व्हॉट्सअप’ भी

व्हॉट्सअप के साथ फेसबुक भी

‘एसएमएस’ भी S S कभी ‘व्हीडीओ क्लिप’ भी

ए भाय जरा देखके चलो

जिस जिस ग्रुप में तू रहता है

आते जाते, चलते फिरते,

सुबह-शाम, दिन-रात मेसेज तू शेअर करता है

स्मार्ट फोन से भी ज्यादा तू स्मार्ट दिखने लगता है

ये सब करते करते S....

ये सब करते करते तू कहाँ खो जाता है ?

वाय फाय के जमाने में-S....

वाय फाय बन जाता है-फाय के जमाने में तू हाय-

सर्चिंग, डाऊनलोड के चक्कर में S....

सर्चिंग, डाऊनलोड के चक्कर में तेरा नेटपेक भी खत्म हो जाता है-

ये सब करते करते S....

ये सब करते करते अपने ही मित्रों से

खुद को आये ‘संदेश – शेरो – शायरी’ को भी पढ़ते चलो

ए भाय, जरा देखके चलो

व्हॉट्सअप के साथ फेसबुक पर

अपना ही ‘डी.पी.’ या ‘कवर फोटो’ तू बार बार अपलोड क्यों करता है ?

नये नये मित्र और गर्ल फ्रेंड की खोज में तू सदा बिजी रहता है

अरे, की उमर में 50 S....

अरे की शाइनिंग क्यों मारता है 40 की उमर में तू 50

बड़े बड़े बुजुर्गों की तरह S....

बडे बडे बुजुर्गों की तरह जीवन जीने के संदेश – नुस्खे भी तू देता है
पर कभी कभी S हां हां ... S... पर कभी कभी
पर कभी कभी तुझे आये हुये ‘फ्रेंड रिक्वेस्ट’ को ‘कन्फर्म’ भी करते चलो
ए भाय, जरा देखके चलो

ए भाय जरा देखके चलो
फेसबुक के साथ साथ व्हाट्सअप भी
व्हाट्सअप के साथ साथ फेसबुक भी
एसएमएस भी कभी कभी व्हीडीओ क्लिप भी
ए भाय, जरा देखके चलो

महा-ई दर्पण

एक बहुत ही सुंदर कविता



श्रीमती स्वाती अह्वाड,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

जो कह दिया वह शब्द थे ;
जो नहीं कह सके वो अनुभूति थी
और जो कहना है मगर ;
कह नहीं सकते, वो मर्यादा है ॥

बात पर गौर करना -----

पत्तों सी होती है, कई रिश्तों की उम्र
आज हरे.. कल सूखे..
क्यों न हम, जड़ों से, रिश्ते निभाना सीखें ॥

रिश्तों को निभाने के लिए ,
कभी अंधा, कभी गूँगा,
और कभी बहरा; होना ही पड़ता है ॥

बरसात गिरी और कानों में इतना कह गई कि.....
गर्मी हमेशा किसी की भी नहीं रहती ॥



श्री.संतोष एन. पायस,
उपनिदेशक

स्त्री स्वतंत्रता

सालों की लड़ाई से हमने हासिल तो की थी स्वतंत्रता
लेकिन पैरों में बंधी थी रीति-रिवाजों की जंजीर ।
आजादी थी जीने की जी भर कर किंतु लकीर के अंदर
हिम्मत तो खूब जुटाते थे लकीर लांघने की, किंतु कठिन था जाना उस पार ।

इतने ही अवसर में हमने छुआ आकाश की बुलंदियों को ।
चाहे मंगल-चाँद की सवारी हो; या हो खेल-कूद; या हो पढ़ाई ।
हर क्षेत्र में हमने अपनी छाप छोड़ी; न कभी राह अपने तत्व और मूल्यों की मोड़ी ।

फिर से खिंच न जाए जंजीर रीति-रिवाजों की, अनचाहे बंधनों की ।
अकड़ न जाए आँगन खुलेपन का; क्या दोष है इसमें सामाजिक व्यवस्था का ?
स्वतंत्रता तो हमने हासिल की ही थी;
क्या यही समय है, इन जंजीरों को तोड़कर आजाद होने का ?

श्री संतोष एन. पायस,
उपनिदेशक,
जनगणना कार्य निदेशालय,
महाराष्ट्र, मुंबई.

" मैं और मेरी कहानी "



श्री.किशोर लाडू रासम,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

मुझे भी आने दो इस जहाँ में,
मैं भी आपके कोख से जन्म लेना चाहती हूँ।
मुझे भी जीने दो इस चमन में,
मैं भी इस चमन की हरियाली में खिलना चाहती हूँ।

मेरा गला मत घोट दो मेरे जन्म से ही पहले
सोच लो जरा, आपको भी एक माँ ने ही जन्म दिया है।

क्या मैं जान सकती हूँ मेरे जन्म से पहले ही
दुरबीन द्वारा लिंग परिक्षण करके
कन्या-भ्रूण की हत्या क्यों की जा रही है ?
मुझमें क्या कमी है ? मैं कौन नहीं हूँ ?

इतिहास के स्वर्णिम पन्ने पलट के देखो !

वीरमाता जिजाऊ भोसले कौन थीं? अगर वो न होती...
तो छत्रपति शिवाजी महाराज न होते !
और न ही 'हिन्दू स्वराज्य' प्राप्त होता !

इसी धरती पर रानी लक्ष्मीबाई भी जन्मी थी !
जिसने लड़ते लड़ते रणभूमि पर अपने प्राण त्याग कर
'स्वतंत्रता' का बीज बोया था!

इसी भूमि पर जन्मी थी सावित्रीबाई फूले !
जिन्होंने कन्याओं को शिक्षा दिलाने के लिए सामाजिक रोष सहकर
कन्या पाठशालाओं को जन्म दिया !

'भारतीय घटना के शिल्पकार' को जन्म देनेवाली
माता भीमाबाई भी एक स्त्री ही तो थी !
अगर वो न होती, तो आज की 'स्वतंत्रता, समता और बंधुता' कहाँ होती !

ये इतिहास की नारियाँ ना होती तो...
तो कैसे मिलता 'हिन्दू स्वराज्य' ?
'स्वतंत्रता' की क्रान्ति का बीज कैसे पनपता?
शिक्षा क्षेत्र के बिना 'नारी की उन्नति' कैसे होती ?
और ये 'स्वतंत्रता, समता और बंधुता' कैसे मिलती ?

मैं ही 'इंदिरा' का धैर्य थी !
मैं ही 'कल्पना चावला' की उड़ान थी !
मैं ही 'पी. टी. उषा' की दौड़ हूँ !
मैं ही आपके अंदर के 'ममता की भाषा' हूँ !
मैं ही इस देश की पहली 'प्रतिभा'
जो राष्ट्रपति पद से सम्मानित हूँ !

जन्म लेती हूँ कन्या बनकर ये क्या मेरा दोष है ?
फिर भी 'बेटा क्यों नहीं?' सोच कर आपका मुझ पर रोष ?
क्या, 'बेटा प्राप्ति से ही मिलता है मोक्ष ! और...
'बेटी को जन्म से पहले ही मुक्ति दिलाते हो!
जरा सोचो ! अगर ऐसा ही होता रहेगा तो...
मानव समाज की रचना ध्वस्त हो जाएगी ! फिर...
फिर 'न रहेगी बांस न बजेगी बांसूरी' ऐसी घड़ी आयेगी ।

'तुम्हें भी एक मां ने ही जन्म दिया है'
सोचो जरा, मेरी हत्या के पहले ।
मेरा गला मत घोट दो मेरे जन्म के पहले ही !
मेरा गला मत घोट दो मेरे जन्म के पहले ही !

भवदीय,
श्री किशोर लाडू रासम,
डी पी ए ग्रेड 'ए'

कर्म का फल

हैं कौन इस जहां में जो,
न करता कोई बहाना है,
यही खुद को समझाना है।

जो हैं करते बहाने सौ,
काम नहीं कुछ कर पाते हैं,
रह जाते हैं पीछे हमेशा,
और बहाने बनाते हैं।

खुश रहो हमेशा, काम करो,
परिणाम हमेशा अच्छा होगा,
मिलेगा फल उसे ही यहां,
जो कड़ी मेहनत का पक्का होगा।



श्री.विक्रम लोखंडे,
एम.टी.एस

विक्रम शं. लोखंडे,
जनगणना कार्य निदेशालय,
महाराष्ट्र, मुंबई

हम तुम जैसे बन जायेंगे

आज बच्चों को शोर मचाने दो,
कल जब ये बच्चे बड़े हो जायेंगे।
खामोश जिंदगी बितायेंगे,
हम-तुम जैसे बन जायेंगे ॥

गेंदों से तोड़ने दो शीशे इनको,
कल जब ये बड़े हो जायेंगे।
दिल तोड़ेंगे या खुद टूट जायेंगे,
हम-तुम जैसे बन जायेंगे ॥

खाने दो जो दिल चाहे इनका,
कल जब ये बड़े हो जायेंगे।
हर दाने की कैलोरी गिनायेंगे,
हम-तुम जैसे बन जायेंगे ॥

भरने दो उन्हें सपनों की उड़ान,
कल जब ये बड़े हो जायेंगे।
पर इनके भी कट जायेंगे,
हम-तुम जैसे बन जायेंगे ॥

बनाने दो इन्हें कागज की कश्ती,
कल जब ए बड़े हो जायेंगे।
ऑफिस के कागजों में खो जायेंगे,
हम-तुम जैसे बन जायेंगे ॥

दोस्तों संग छुट्टियाँ मनाने दो,
कल जब ए बड़े हो जायेंगे।
दोस्ती-छुट्टी को तरस जायेंगे,



श्री. अमित,
एस.आई.ग्रेड-॥

हम-तुम जैसे बन जायेंगे ॥

रहने दो आज मासूम इन्हें,
कल जब ये बड़े हो जायेंगे ।
ये भी “समझदार” हो जायेंगे,
हम-तुम जैसे बन जायेंगे ॥

अमित,
एस.आई.ग्रेड-II

महा-ई दर्पण



श्री.राजकिरण चिंदे,
एस.आई.ग्रेड-II

“जनगणना एक जोश है,वह हर दस साल मे आती है।”

बच्चे, बूढ़े, नवयुवक सबकी एकसाथ होकर ,
देश का भविष्य बनाती है।

जनगणना एक जोश है, वह हर दस साल में आती है॥

ऋग्वेद, पुराणों में है महत्व जिसका,
राजनीति, कौटिल्य-नीति ठहराती है।
मुगल काल ‘आईन-ए-अकबरी’ में जनसंख्या,
उद्योग एवं समाज के अन्य पहलुओ को बताती है।
जिसकी प्रक्रिया बहुत बड़ी है,
वो देश का भविष्य बनाती है,

जनगणना एक जोश है,वह हर दस साल में आती है॥

देश की पहली गणना लॉर्ड मेमो ने करवाई है।
गैर-समकालीन रूप से पूर्ण प्रक्रिया करके
देश की गाड़ी आगे बढ़ाई है।
सभी धर्म जाति पंथों को लेकर ,
देश की एकता बताती है।

जनगणना एक जोश है,वह हर दस साल में आती है॥

देश की बदलती जरूरतों के साथ,
प्रश्नावली शामिल की जाती है।
नागरिकों के जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारीयाँ,
एकत्रित की जाती हैं।
दो चरणों मे होने वाली,
राष्ट्रीय एकता बताती है।

जनगणना एक जोश है, वह हर दस साल में आती है।

जन सांख्यिकीय, अर्थशास्त्र, मानवविज्ञान एवं,
कई अन्य क्षेत्रों में महत्व है जिसका,
वित्त आयोग चुनाव नीति एवं सभी क्षेत्रों में,
अपना झंडा लहराती है।

जनगणना एक जोश है, वह हर दस साल में आती है।

श्री राजकिरण अरुण चिंदे,
एस.आई.ग्रेड-II

महा-ई-दर्पण

हिन्दी का सम्मान



श्री जितेंद्र कुमार,
भूगोलवेत्ता

हिन्दी का सम्मान करें ये भारत की पहचान है,
हिन्दी अपनी भाषा जिसमें जिन्दा हिन्दुस्तान है॥
ये कबीर की वाणी है खुसरो की गलहार है ।
चन्द की इसमें गूँज भरी जो वीरों की तनकार है ॥
ये संतों-भक्तों की भाषा मिली हमें वरदान है ।
हिन्दी का सम्मान

भारतेन्दु ने इंदु बनाया, और दिया उजियार है ।
हर शोषित का स्वर है इसमें, प्रेमचन्द की धार है ।
महादेवी की करुणा इसमें और प्रसाद का सार है ।
कवि निराला कंठ ने इसमें खूब भरी हुंकार है ।
ये अतीत का गीत है वर्तमान का गान है ।
हिन्दी का सम्मान

आज़ादी के दीवानों ने तान उठाई हिन्दी में ।
और क्रांति की हर कोने में अलख जगाई हिन्दी में ।
जाग उठे थे बाल-वृद्ध, जागी तरुणाई हिन्दी में ।
राष्ट्र-भक्ति की जन-गण-मन में ज्योति जलाई हिन्दी में ।
ये देश का अपना स्वाभिमान है, ये देश की अपनी शान है ।
हिन्दी का सम्मान

धन्यवाद!

जितेन्द्र कुमार
(भूगोलवेत्ता)
मानचित्र अनुभाग
जनगणना कार्य-निदेशालय,
महाराष्ट्र (मुंबई)

जिंदगी

जिंदगी तो चल रही है..
पता नहीं कहाँ रुकना है॥

भीड बहुत है लोगों की..
पता नही कौन पराया, कौन अपना है॥

किसी ने न दिया किसी का साथ..
इंसान ने इंसानियत को हराया है॥

जब बात निकली अपनों की..
अपनों ने ही कहा उसे पराया है॥



श्री.भास्कर धसाडे
वरिष्ठ परामर्शदाता

भास्कर पांडुरंग धसाडे
वरिष्ठ परामर्शदाता (प्रशासन)

वक्त

वक्त को आजमाना चाहा,
वक्त ने गुलाम कर लिया॥

वक्त को अपनाना चाहा,
वक्त ने यूँ ठुकरा दिया॥

वक्त को सीखना चाहा,
वक्त ने मुँह मोड़ लिया॥

वक्त के साथ चलना चाहा,
वक्त ने राहों को रोक दिया॥

वक्त को अब बदलना चाहा,
वक्त ने हमें ही बदल दिया॥



श्री राकेश पठाडे,
कनिष्ठ परामर्शदाता

राकेश बा. पठाडे
कनिष्ठ परामर्शदाता (प्रशासन)

अनदेखी

पावों के लड़खड़ाने पे तो है सबकी नजर ।
पर सर पे है कितना बोझ कोई देखता नहीं॥

चेहरे की मुस्कान पे है सबकी नजर।
पर दिल में है कितना दुख कोई देखता नहीं॥

चमकते जूतों पे है सबकी नजर ।
पर पावों के छालों को कोई देखता नहीं॥

थाली में सजे अच्छे खाने पे है सबकी नजर।
पर माँ के जले हथेली को कोई देखता नहीं॥

शुद्ध हवा पे है सबकी नजर।
पर कटे पेड़ को कोई देखता नहीं॥

स्वच्छ सुंदर शहर पर है सबकी नजर।
पर कूड़ा कूड़ेदान में कोई फेकता नहीं॥

शुद्ध जल पे है सबकी नजर।
पर नदियों की मलिनता को कोई देखता नहीं॥



श्री भास्कर धसाडे,
वरिष्ठ परामर्शदाता

भास्कर पांडुरंग धसाडे
वरिष्ठ परामर्शदाता (प्रशासन)

यहाँ-वहाँ सब जगह कुआँ था ।



श्री संजीव गाँवकर,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

दसवें और बारहवें जैसे महत्वपूर्ण वर्ष में कोरोना की महामंदी उत्पन्न हुई। घर से निकलना मुश्किल था। अनिश्चितकाल के लिए स्कूल बंद कर दिए गए। छात्रों और अभिभावकों के साथ-साथ शिक्षकों को भी पता नहीं था कि परीक्षा कैसे आयोजित की जाएगी। असमंजस का माहौल था। ऑनलाइन अध्ययन में अंतहीन कठिनाइयाँ थीं। वास्तविक कक्षा में बैठना, शिक्षक के मार्गदर्शन में अध्ययन करना और साथियों की संगति में और घर के एक कोने में मोबाइल के छोटे पर्दे पर बैठना, जो आपने पहले कभी अनुभव नहीं किया है, में बहुत बड़ा अंतर है। बच्चों को इस अध्ययन की आदत पड़ने में कुछ समय लगा। इस महत्वपूर्ण परीक्षा में अच्छे अंक लाने का दबाव बच्चों पर होता है। यह विपरीत स्थिति है.... बेहतर होगा कि बच्चों की मानसिक स्थिति का अंदाजा न लगाया जाए। शहर के बच्चों को तो इसमें काफी सुविधाएं हैं, लेकिन गांव के बच्चों की पढ़ाई ठप है, लेकिन इसका जिम्मेदार कौन है ?

कुछ अपवादों को छोड़कर, अधिकांश छात्र ईमानदारी से प्रयास कर रहे थे। शिक्षकों से सीधे मार्गदर्शन प्राप्त करने में कठिनाइयों के कारण यू-ट्यूब पर उपलब्ध कुछ शैक्षिक सुविधाओं का पता लगाया जा रहा था। जमाल इस तरह से विषय को समझने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उनकी राय थी कि परीक्षा किसी भी रूप में होगी। उसके लिए जीवन का अध्ययन किया जा रहा था। स्कूलों से लिए गए विभिन्न आंतरिक परीक्षणों को ईमानदारी से निपटाया जाना था। इसलिए बच्चों के इन ईमानदार प्रयासों और कड़ी मेहनत की सराहना की जानी चाहिए। परीक्षा न देने का निर्णय बहुत अंत में लिया गया था, इसलिए कोई यह न कहे कि बच्चों द्वारा प्राप्त अंक अब निःशुल्क हैं। इस वर्ष उनकी मानसिक स्थिति का भी ध्यान रखना चाहिए। कुछ अभागे बच्चों ने काम के बाद घर पर बैठे एक पिता, कोविड सेंटर में 15 दिनों से अलग रह रहे माता-पिता और करीबी खोए हुए रिश्तेदारों के आघात को भी सहा था।

ऐसी समग्र स्थिति में सभी सफल छात्रों की सराहना की जानी चाहिए। हमेशा की तरह, प्रत्येक छात्र का मूल्यांकन ठीक से नहीं किया जा सकता है, लेकिन इससे प्राप्त अंकों का महत्व कम नहीं होता है। हो सकता है कि कुछ के साथ गलत व्यवहार किया गया हो, लेकिन इसका कोई उपाय नहीं है। हमें इन कायर दिमागों के उत्थान का काम करना है। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उन्हें कोई समस्या न हो। उन्हें उनके अगले सफल कैरियर के लिए बधाई। उनके मुँह में प्रशंसा डाली जानी चाहिए, और इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि तालियाँ उनकी पीठ पर न गिरें।

अतः अंत में सभी छात्रों को बधाई एवं अगले शैक्षणिक वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।



श्री संजीव गाँवकर,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

माँ

दोपहर के 2 बज रहे थे. आज सुबह से ही मौसम बेहद गर्म हो गया है। भले ही दोपहर हो चुकी थी, लेकिन आसमान में काले बादल छाए रहने के कारण अँधेरा हो रहा था! कभी भी गिर सकती है बारिश की बौछारें! बारिश शुरू होने से पहले घर पहुंचने का सोचा, अस्पताल बंद कर कार को लात मारी।

अभी आधे रास्ते में ही थे कि तेज बारिश शुरू हो गई। बारिश से बचने के लिए जगह ढूँढ़ना था। सड़क के किनारे एक जर्जर शेड नजर आया। किसी तरह सड़क किनारे खड़ी कार शेड में घुसी। रूमाल से गीले अंग को पोंछने लगा.....बच्चे के रोने की आवाज आ रही थी। इधर-उधर देखा तो कोई नजर नहीं आया!

जैसे-जैसे आवाज बढ़ती गई... वैसे-वैसे आवाज की दिशा भी बढ़ती गई! सड़क के दूसरी ओर, आधी ढही दीवार के किनारे, तीन छोटे पिल्ले बारिश में भीग रहे थे! असल में उसे नाम से 'पिल्ला' कहा जाता था.... वरना वो तो बस 'बेबी' थी! सफेद सफेद...पीला...

बारिश की बूँदें जैसे-जैसे उन पर पड़ने लगीं, उनकी हलचल बढ़ती गई! हर कोई अन्य दो के नीचे अपने शरीर को छिपाने की कोशिश कर रहा था। हर कोई खुद को बारिश से बचाने के लिए एक दूसरे को भीगाने की कोशिश कर रहा था।

पहले तो मुझे लगा कि यह मज़ाक है... लेकिन जैसे-जैसे बारिश तेज़ होने लगी, मुझे उनकी चिंता होने लगी! मेरे मन में विचार आया... कि मैं उससे आगे जाकर चूजों को उठाकर यहाँ ले आऊँ।

एक कुत्ता पिल्लों की ओर दौड़ता हुआ आया जब तक कि मैंने कुछ निर्णय नहीं लिए। मेरे लिए वो सिर्फ एक 'कुत्ता' थी... लेकिन उन पिल्लों के लिए वो 'माँ' थी।

माँ को देखकर उनके चेहरे खिल उठे! जो जीव आपस में लुका-छिपी खेलते थे, वे अब अपनी माँ के इर्द-गिर्द मंडराने लगे। एक पल के लिए बारिश भूल गया बच्चा और माँ को किया अलगा।

हालाँकि, माँ की आँखें अलग दिख रही थीं। वह एक बार आसमान की ओर देख रही थी... और एक बार अपने चूजों को! माँ ने मौसम का अंदाज़ा लगा लिया... उसे एहसास हुआ कि थोड़ी ज़्यादा बारिश होगी! मुझे लगा कि उसकी आँखों की देखभाल की जगह ले लेती है।

उस कठिन परिस्थिति में उसने बच्चे की जीभ को सुखाने के लिए उसकी जीभ को चाटना शुरू कर दिया! फिर वह धीरे से गुराया... लगभग मानो उसने अपने बच्चे को निर्देश दिया हो... अब क्या करना है।

वो उठी... वो मुझ पर झुकी और एक बदन पर सो गई और तीन पिल्लों को ढकने की कोशिश की... लेकिन कोशिश नाकाम रही....वो फिर उठी और मेरे सामने सोई और फिर से वही कोशिश की... लेकिन कुछ करने के बाद उसके पिल्लों को बारिश में गीला मत करो।

अब मैं उत्सुक था... अब क्या करेगी वो माँ।

माँ के प्यार का कोई अंत नहीं है, यह पक्का है! उसने कुछ तय किया और उठ गई! एक बार मैंने आसमान की तरफ देखा... और फिर वापस मेरे पास! उसकी आँखों में दया और करुणा की भावनाएँ।

एरवी कभी भी डर के मारे किसी पुरुष के पास नहीं जाती थी, लेकिन उसकी माँ की देखभाल उसे ऐसा करने के लिए मजबूर कर रही थी! कभी मेरी तरफ देखती... और कभी छप्पर की तरफ देखती, एक सबक लेकर करीब आती... शेड में घुस गई... हर तरफ देखती... पर शायद वो मेरी परेशानी से डरती थी! मेरी तरफ देखते ही उसकी आँखों में एक मिन्नत थी... मानो मुझसे भीख मांग रही हो... बारिश होने तक मेरे बच्चों को यहीं रहने दो।

मैं उसे देखते ही धीमा हो गया! मानो उसे 'ग्रीन सिग्नल' मिल गया हो! वह भाग गई और अपने मुँह में एक पिल्ला पकड़े हुए शेड में आई! उसने धीरे से मेरे पैरों पर पिल्ला रखा और मेरी तरफ देखा... चुपचाप मानो मुझे उस बच्चे की देखभाल करने के लिए कह रही हो।

उसके पिल्लों के लिए उसका प्यार देखकर मैं कहीं से भी बाहर आ गया.... पता ही नहीं चला कब उसकी आँख से एक बूंद मेरे गाल पर गिर जाए...

मुझसे अनजान, मैं उस परिवार का हिस्सा था! वह एक और पिल्ला लाने के लिए दौड़ी उसे अब मुझसे डरना नहीं चाहिए! मानो उसे मुझ पर विश्वास था।

दो पिल्लों को लाने के बाद तीसरा पपी डर गया... डर गया... वह वहाँ अकेले साँस नहीं ले सका! चंद पलों में उसकी माँ उसे ले आती... लेकिन उसके पास सब्र नहीं था।

वह गिर रहा था और उठ रहा था ... ठोकर खा रहा था ... वह अभी-अभी आने लगा है! उसी समय.... अचानक एक कार सड़क से जोर-जोर से निकली... एक कर्कश हॉर्न की आवाज आई... मैंने उस कार को देखा.... मैंने उस पिल्ला को देखा.... कार आ रही थी..... पिल्ला भी आगे आ रहा था... मुझे नहीं पता था कि क्या करना है..... माँ के मुँह में एक और पिल्ला था... वह इसे और नीचे नहीं रखना चाहती थी.. वह अंदर थी बैकग्राउंड... उसने कुछ नहीं देखा... मैं देख सकता था... लेकिन.... लेकिन कुछ सुझाव तक.... चाबी तक.... कार जोर से आई.... और... और पिल्ला को जोर से मारा और चला गया....

एक दिल दहला देने वाली 'क्वाथय...' की आवाज जोर से आई... एक बार.... एक बार.... उसका मन पार हो गया.... एक पल में... सहने की ताकत नहीं थी...

मेरी माँ ने मुझे देखा... एक पल के लिए भी नहीं जानती थी... उसका मुँह छोड़ो... या सड़क पर पड़ी हुई को ठीक करो... मेरा दिल धड़कने लगा... मेरे अंग काँपने लगे...

वह माँ चौंक गई... उसने अपने मुँह से पिल्ला फेंक दिया और राहत की साँस के साथ सड़क पर दौड़ी... पिल्ला को देखने के लिए... ड्राइवर का पीछा करने के लिए... उसे कुछ पता नहीं था.... वो गुस्से में कार के पीछे भागी.... थोड़ा सा.. पिल्ला याद आया.... वापस भागा.... उसके सिर से खून बह रहा था.... उसका सिर चाटने

लगी..... उसके अंग... बहता खून... वह फिर से गुस्सा हो गई... कार की ओर दौड़ी... जोर से भौंकते हुए भागी... थक गई.... बच्चे को फिर से याद किया.... वापस मुड़ गयी... बच्चे के करीब आ गयी...

इतने भी शेर में उन दो छोटे से प्राणियों को समझ गई.... कुछ अनपेक्षित हुआ.... वह ठोकर खाकर बाहर आ गई। बारिश में... बच्चे के पास आ गई... सूंघने लगी.... उठने लगी...

एक हिरा होगा जो बच्चे के लिए अपनी जान जोखिम में डालेगा..... रानी लक्ष्मीबाई अपने बच्चे को अपनी पीठ पर ढाल की तरह बांधेगी और अंग्रेजों से हाथ मिलाएगी .. ताडोबा के जंगल में उसका बच्चा.....माँ का प्यार, स्नेह और बलिदान आज तक मैंने बहुत से किस्से सुने थे... लेकिन आज का अनुभव कुछ अलग था।

सच में! माँ यह माँ होती है !उसके प्यार का कोई अंत नहीं है, उसके बलिदान की कोई सीमा नहीं है, उसके प्यार के लिए कोई श्वेत-श्याम बाड़ नहीं है, उसके प्यार के लिए गरीबी-समृद्धि का कोई स्पर्श नहीं है। उस माँ और उन पिल्लों के प्यार को देख मैं रोया..... मैं कितना रोया.... बारिश के पानी के साथ..... दोस्तों हृदय से निवेदन..... गूँगा जानवरों को समझो.... उनके पास ये मन है..... उनकी भावनाएं हैं....

श्री संजीव श्रीकृष्ण गाँवकर,
डी.पी.ए.ग्रेड-'ए'

महा-ई-दर्पण

त्यागी पेड़



श्री जितेंद्र कुमार,
भूगोलवेत्ता

यह कहानी इसी सदी की है एक घने जंगल में **आम का पेड़** था। उस जंगल के पास ही एक छोटा-सा गाँव था। उस गाँव का एक छोटा-सा लड़का **रामू** उस जंगल में जाकर उस आम के पेड़ के पास खेलता रहता था। वह उस पेड़ पर चढ़ता, आम खाता और बाद में आराम से उस पेड़ के नीचे नींद कि झपकी लेता, रामू को पेड़ के साथ खेलना अच्छा लगता तो उस आम के पेड़ को भी खुशी होती थी।

अब रामू प्रतिदिन उस पेड़ के साथ नहीं खेलता था। एक दिन की बात है, रामू चलते-चलते उस पेड़ के पास गया। वह बहुत दुखी था। तभी पेड़ ने उससे कहा, “चलो! रामू बेटा मेरे साथ खेलो।” रामू बोला, मैं अब बच्चा नहीं रहा जो तुम्हारे साथ खेलूँ, अब मैं पेड़ के साथ नहीं खेलता। मुझे अब खिलौने चाहिए और इनको खरीदने के लिए **पैसों** की जरूरत है। पेड़ बोला, क्षमा करो बेटा! पर मेरे पास पैसे तो नहीं हैं लेकिन मेरे आम तोड़कर बाजार में जाकर पैसे कमा सकते हो। यह सुनकर रामू खुश हुआ, और आम तोड़े, उन्हें जमा किया और खुशी-खुशी चला गया। बहुत दिनों तक रामू उस पेड़ के पास नहीं आया। बेचारा! आम का पेड़ बहुत दुखी हो गया।

कुछ वर्षों बाद, रामू आदमी बन गया था, फिर से वह आम के पेड़ के पास आया, पेड़ उसे देखकर खुश हुआ और बोला, रामू बेटा! चलो आओ मेरे साथ खेलो। रामू बोला, मुझे तुम्हारे साथ खेलने का समय नहीं है, और वैसे भी अब मैं बड़ा हो गया हूँ मुझे अपने परिवार के लिए काम करना है, हमें **एक घर** चाहिए। क्या तुम मेरी सहायता कर सकते हो? रामू ने पूछा।

पेड़ बोला, क्षमा करो बेटा! पर मेरे पास देने के लिए घर तो नहीं है लेकिन मेरी शाखाएं काट कर घर बना सकते हो। ऐसा सुनते ही रामू ने पेड़ की सभी शाखाएं काट दी और उन्हें साथ में लेकर वहाँ से खुशी-खुशी चला गया। शाखाविहीन होने के बाद भी पेड़ खुश था। परन्तु रामू उसके बाद नहीं आया। और पेड़ बेचारा! बहुत दुखी हुआ।

कुछ सालों बाद, गर्मियों के दिन में, रामू फिर से उस पेड़ के पास आया, पेड़ बहुत खुश हुआ, आओ बेटा! चलो मेरे साथ खेलो, पेड़ ने उसे देखकर खुशी से कहा। नहीं अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ, अब मुझे जिन्दगी आराम से बिताने के लिए नौकायन करना है। क्या तुम मुझे **नाव** दे सकते हो? रामू ने पूछा। इस पर पेड़ बोला, मेरे तना का इस्तेमाल करो और नाव बनाओ। फिर तुम नौकायन करके खुश रह सकते हो। फिर क्या था रामू ने उस पेड़ का

तना भी काट लिया। और उस से एक नाव बनाई और नौकायन को चला गया फिर बहुत सालों तक वहाँ वापस नहीं आया।

ऐसे ही कुछ वर्ष बीत गए, रामू अपने जीवन के अंतिम क्षणों में वापस आया, उसको देखकर पेड़ बोला, मुझे क्षमा करना बेटा! लेकिन अब तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं बचा है, आम तो कभी के खत्म हो गए, रामू बोला कोई बात नहीं, अब मेरे दाँत भी तो नहीं हैं, आम खाने के लिए। पेड़ बोला, तुम्हारे खेलने के लिए शाखाएँ भी नहीं हैं। पर अब मैं भी बूढ़ा हो गया हूँ शाखाओं पर चढ़ नहीं सकता, रामू ने जवाब दिया। पेड़ बोला, मेरे पास सचमुच कुछ भी नहीं बचा है, तुम्हें देने के लिए बस मेरे पास बढ़ने वाली जड़ें ही हैं, पेड़ रोने लगा। अब मुझे किसी की भी जरूरत नहीं है, अब मैं थक गया हूँ बस आराम करना चाहता हूँ, रामू बोला। फिर पेड़ बोला, कि तो फिर अच्छा है पेड़ की जड़ें आराम के लिए सबसे अच्छी होती हैं, मेरे पास बैठो और आराम करो। रामू नीचे बैठा आम का पेड़ खुश हुआ और रोने लगा।

नैतिकता- कैसे एक पेड़ हमारे परिवार को जीवन-भर बस देता ही रहता है और मनुष्य उस बात की कभी इज्जत नहीं करता। पेड़ हमें प्राण-वायु, फल-फूल, लकड़ी, औषधि, शीतल-छाया एवं अन्य उपयोगी वस्तुएं प्रदान करते हैं जबकि मनुष्य अपने स्वार्थ व लाभ के लिए वनों को काटने से नहीं चूकते। इस कहानी से निःस्वार्थ त्याग कैसे किया जाता है यह हम सभी को सीखने के लिए मिलता है। इसका सर्वोच्चतम उदहारण हमारे त्यागी पेड़ हैं जो जीवन-भर मनुष्य को देते ही रहते हैं।

धन्यवाद!

जितेन्द्र कुमार
(भूगोलवेत्ता)
मानचित्र अनुभाग
जनगणना कार्य-निदेशालय,
महाराष्ट्र

चुटकले

भिखारी: भगवान के नाम पे दे दे बाबा.....

विद्यार्थी: ये ले.....

मेरी बी.कॉम की डिग्री रख ले...!

भिखारी: अब रुलाएगा क्या पगले....

तुझे चाहिए तो मेरी इंजीनियरिंग की रख ले..!



श्री.जितेंद्र कुमार,
भूगोलवेत्ता

जितेन्द्र कुमार
(भूगोलवेत्ता)
मानचित्र अनुभाग,
जनगणना कार्य निदेशालय,
महाराष्ट्र

महा-ई दर्पण



श्री.किशोर लाडू रासम,
डी.पी.ए.ग्रेड-ए

भारत की जनगणना २०२१-: स्लोगन्स -

"भारत की जनगणना दशक में एक ही बार...
चलो, कर्तव्य निभायें करके गणना हर द्वार !"

"एक ही आस, एक ही ध्यास, सबका विकास
सही जनगणना उद्दिष्ट सफलता का रखे प्रयास "!

"जनगणना के आंकड़े बताते हैं विकास की हवा,
कितने साक्षर-निरक्षर; तथा कौन आज यहाँ कल कहाँ!"

"मकानों की गणना के साथ जन जन की गिनती,
उचित आंकड़े दर्शाते हैं देश की प्रगति "!

"हर भारतीय का कर्तव्य खुद को लाए गिनती में
एक कदम चलके स्वयं को लाए गणना आपूर्ति में !"

"ऐ मेरे वतन के लोगों जरा गिनती तो कर लो अपनी,
चलो, मिलकर हाथ बटाएँ सफल करें जनगणना अपनी !"

"एक देश राज्य अनेक, जात पात धर्म पंथ अनेक,
फिर भी देश की विविधता में एकता लाए करके जनगणना नेक "!

"मानव का रहा एक ही ध्यान; रोटी, कपड़ा और मकान,
जनगणना अवधि में रहे सबका अपनी गणना की ओर ध्यान "!

श्री किशोर लाडू रासम, डी.पी.ए.ग्रेड-‘ए’

जनगणना कार्य निदेशालय महाराष्ट्र मुंबई
हिंदी पखवाड़ा 2021 प्रतियोगिता परिणाम

अनुक्रमांक	पुरस्कार प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार रुपये 1200	द्वितीय पुरस्कार रुपये 1000	तृतीय पुरस्कार रुपये 800	सांत्वना पुरस्कार रुपये 500
1	वाद विवाद	श्री जितेंद्र कुमार, भूगोलवेत्ता	श्री अजय नायक, डी पी ए ग्रेड "ए"	श्रीम. सुजाता रांगणेकर, डी पी ए ग्रेड "ए"	श्री व्ही बी निरवणे , एम. टी. एस.
2	कथा कथन	श्री के एम पाटणे, डी पी ए ग्रेड "ए"	श्री सुमित दासगुप्ता, डी पी ए ग्रेड "बी "	कुमारी काजल काले, कनिष्ठ परामर्शदाता	श्री सुमित वाघेला, एम. टी. एस.
3	तुरंत शब्द अनुवाद , एम टी एस	श्री व्ही बी निरवणे , एम. टी. एस.	श्री पी जे पांचाल, एम. टी. एस.	श्री विक्रम लोखण्डे, एम. टी. एस.	श्री एच आर मेहर, एम. टी. एस.
4	तुरंत शब्द अनुवाद ए एम टी एस छोड़कर	श्री भास्कर दसाल, वरिष्ठ परामर्शदाता	श्री जितेंद्र कुमार, भूगोलवेत्ता	कुमारी काजल काले, कनिष्ठ परामर्शदाता	श्री अतुल राणा, निम्नस्तर लिपिक
5	वाचन	श्री विक्रम लोखण्डे, एम. टी. एस.	श्रीमती के चिखले, कार्यालय अधीक्षक	कुमारी मेधा घाडी, कनिष्ठ परामर्शदाता	कुमारी काजल काले, कनिष्ठ परामर्शदाता
6	दिए गये विषय पर व्याख्यान देना	श्री जितेंद्र कुमार, भूगोलवेत्ता	श्री अजय नायक, डी पी ए ग्रेड "ए"	श्री हिमांशु शेखर, कनिष्ठ परामर्शदाता	श्री के एम पाटणे, डी पी ए ग्रेड "ए"
7	गायन	श्री सुमित दासगुप्ता, डी पी ए ग्रेड "बी "	कुमारी उत्तरा जाधव, कनिष्ठ परामर्शदाता	श्री विक्रम लोखण्डे, एम. टी. एस.	श्री अजय मोरे, डी पी ए ग्रेड "ए"
8	प्रश्न मंच	श्री अतुल राणा, निम्नस्तर लिपिक	कुमारी जागृति डसाले, कनिष्ठ परामर्शदाता	कुमारी हेमंगी सलूनखे, कनिष्ठ परामर्शदाता	श्री विजय घाड़गे , कनिष्ठ परामर्शदाता



एन.एस.आय.टी. स्टडी कॅम्पस, नई दिल्ली



फ्लेमिंगों, स्थल ऐरोली खाडी, नवी मुंबई



कासपठार, जिला सातारा



अंदमान-निकोबार वर्ष- 2017



मानवीय शकलपुष्प, कश्मीर गार्डन वर्ष 2014



सिगल पंछी, ऐरोली खाडी, नवी मुंबई

माननीय निदेशक महोदया द्वारा बदनापुर जालना के प्री-टेस्ट 2021 के निरीक्षण की तस्वीर



मा. निदेशक महोदया द्वारा नये सानपाड़ा कार्यालय में डी.सी.सी. के नवीनीकरण की पूजा की तस्वीर



जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र के अधिकारी, कर्मचारी और परामर्शदाता इनके प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन करते हुए मा. निदेशक महोदया



प्रधान जनगणना अधिकारियों की बैठक के अवसर पर अधिकारियों के साथ मा. निदेशक महोदया



जनगणना कार्य निदेशालय, महाराष्ट्र के अधिकारियों के साथ मा. निदेशक महोदया



महा-ई दर्पण



जनगणना से जनकल्याण



महा-ई-दर्पण



भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

www.censusindia.gov.in

ई-मेल: dco-mah.rgi@censusindia.gov.in



[@CensusIndia2021](https://www.facebook.com/CensusIndia2021)

[@CensusIndia2021](https://www.instagram.com/CensusIndia2021)

[@CensusIndia2021](https://www.twitter.com/CensusIndia2021)

[@CensusIndia2021](https://www.youtube.com/CensusIndia2021)